गेरुआ बाबा

—गोपालराम गहमरी-निवासी

गेरुआ बाबा

लेखक

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार
और
जासूस-संपादक
श्री गोपालराम गहमर-निवासी

प्रकाशक

एस्० एस्० मेहता एँड ब्रदर्स
पुस्तक-प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स
काशी

सजिल्द १)] सं० १९८६ वि० [अजिल्द ॥=)

प्रकाशक—
शिवशंकर मेहता,
एस्० एस्० मेहता एँड ब्रदर्स
५७ सूतटोला, काशी

मुद्रक—
सहादुरराम
हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स, बनारस

वक्तव्य

इन दिनों गद्यकाव्य में बेमाथ की दँवरी हो रही है। जो लोग कलम लेकर साहित्य के मैदान में लिखने के वास्ते उतरते है, उनको औपन्यासिक बनना ही सब से सुगम जान पड़ता है। लेकिन उनकी समझ से यह बात बहुत दूर जा पड़ती है कि उपन्यास साहित्य का कितना मधुर अंग है। वह अपने समय का सच्चा इतिहास होता है। उसके लिये लेखक को कितनी दुनियाँ देखना पड़ती है। चरित्र-चित्रण में जो जितना ही निपुण होता है, उतना ही वह अपने इस असरकारक अस्त्र से संसार का उपकार करने में समर्थ हो सकता है।

यह सब अच्छी तरह समझाने के लिये इस भूमिका में हमको जगह नहीं है। लेकिन अश्लील, निस्सार और कोरी अनहोनी गप्प के उपादान पर गढ़े हुए उपन्यासों की इस समय इतनी बाढ़ है कि साहित्य के इस अँग की इन दिनों बड़ी ही छीछा-लेदर हो रही है।

ऐय्यारी, तिलस्मी और जासूसी का साइनबोर्ड कपार पर लगाकर ऐसी-ऐसी निकम्मी और मगज़ बिगाड़कर समय और आचरण बिगाड़ने वाली इतनी पुस्तकें आज-कल निकल रही हैं, जिनसे लोग इनपुस्तकों पर बेतरह नाक-भौं चढ़ाने लगते हैं।

गेरुआ बाबा इन दोषों से बिलकुल पाक है। यह हम अपने मुंह नहीं कहना चाहते। अनहोनी घटनाओं का तूमार लिए हुए बड़ी ठाट-

बाट और लक्क-दक्क उपन्यासों के इस युग में जो सज्जन हमारी पुस्तकों को सन्मान देते हुए रुचि से पढ़ते हैं, वह इसकी आप ही गवाही देंगे। ऐसे उपन्यासों से आदमी स्वयं चतुर होता है। देश–काल देखकर चालाक चोर और गठकटे उठाई-गीर उचक्कों से सावधान होकर निःशंक भाव से जीवन-यात्रा निर्वाह करने का सुअवसर पाता है। और चेहरा देखकर के आदमी भीतर का पहचानने में वह निपुण हो जाता है।

हम एस्० एस् मेहता ऍंड ब्रदर्स के इस अनुग्रह का अभिवादन करते हैं कि उन्होंने इस पुस्तक को इतनी जल्दी प्रकाशित कर हिंदी प्रेमियों को भेंट किया है।

हिंदी का अकिंचन सेवक,

गोपाल

गेरुआ बाबा

१

"सुपरिंटेंडेंट साहब हैं ?"

"आफ़िस में जा, आफिस में।"

हाथ में एक लिफ़ाफ़ा लिए हुए एक लड़के ने इतना पूछा; फिर भीतर से दाई का जवाब पाकर कहने लगा—"किधर आफ़िस है, किधर ?"

"आमर! बोड़हा! आफ़िस नहीं जानता। कैसा आदमी है ?" कहती हुई वह दाई निकल कर बाहर आई।

दाई आई तो थी अनखायी हुई, लेकिन सामने एक सुंदर लड़के को हाथ में चिट्ठी लिए देखकर हँसती हुई बोली—"लाओ देखें तो किसका है।"

पढ़कर उसने लड़के को लिफ़ाफ़ा लौटा दिया। कहा—"हाँ, सुपरडेंट साहब का है। ले जाव! वह देखो फाटक दिखलाई देता है। उसी में आफ़िस है, जाव।"

लड़का बॉय मेसेंजर था। दौड़ता हुआ आफ़िस में गया। एक महाशय कुर्सी पर बैठे रजिस्टर उलट रहे थे। नमस्ते कहकर उसने चिट्ठी दी। जवाब में जो निकला, उनके कंठ से बाहर नहीं हुआ था कि लड़के ने कहा—"यहाँ अभिवादन लेने का दस्तूर नहीं है क्या ?"

इस छोटे से लड़के का वज्र सा उलहना कुर्सीवाले को बेध गया। कहा—"नमस्ते के जवाब से अधिक जरूरी तो तुमको चिट्ठी का जवाब चाहिए। जाव उस कमरे में।"

लड़का चिट्ठी उठाकर यह कहता हुआ चला—"हाँ! तभी न! मैंने तो समझा था कि आप ही सुपरिंटेंडेंट हैं। जो सुपरिंटेंडेंट होगा, वह अभिवादन को इस तरह लात नहीं मारेगा, न तुम-ताम ही करेगा।"

बात यह कि वह कुर्सी पर का बैठा हुआ आफ़िस का आदमी नहीं-शहर का था, जिसका कोई पहचान का आदमी उसी कुर्सी पर बैठ कर काम करता था। लेकिन अभी तक वह आदमी नहीं आया था, इसी से वह अपनी पहचानवाले की कुर्सी पर बैठा था और उसकी राह देखता था। इस आदमी का अनोखा स्वभाव था। जब इसको कोई सलाम करता, आप भी सलाम करता था। जब कोई आदाब कहता, तो आप भी आदाब कहता। कोई गुडबाई करता, तो आप गुडबाई करता था। लेकिन जब कोई नमस्ते कहता, तब वह कहता था हम नहीं समझते।

लेकिन लड़के के नमस्ते कहने पर अपनी वह बात भी भूल गया और भीतर जाने का इशारा कर के आप वहाँ से उठ खड़ा हुआ।

जब लड़का भीतर जाकर एक बड़े कमरे में पहुँचा। सामने ही बैठे एक गंभीर पुरुष को देख कर पूछा—"सुपरिंटेंडेंट साहब कहाँ हैं?"

"क्यों, क्या काम है?"

ल०—"चिट्ठी लाया हूँ।"

"किसकी है लाओ।"

माथा नवाकर उसने चिट्ठी दी। झट उन्होंने खोलकर पढ़ा और उसी दम जवाब लिखा—"आपको आदमी भेजा गया है"

लड़का जवाब लेकर चलता हुआ।

——:०:——

२

हम यहाँ चिट्ठी भेजने और जवाब देनेवाले दोनों का कुछ परिचय देना चाहते हैं। शहर का नाम हम नहीं बतलावेंगे, न सन, महीना या तारीख ही का पता देंगे। शहर का नाम अलकापुर कहेंगे। जिन दिनों की बात हम कहते हैं, उन दिनों वहाँ सेवासमिति स्थापित हो गई थी। जो मेले-ठेले में और समय-समय पर राजा-प्रजा दोनों को सहायता देती थी। लोगों को उसके काम पर बड़ी श्रद्धा-भक्ति थी। उसके मेंबरों की मुस्तैदी और परोपकार के कारण सब लोगों का उस समिति पर बड़ा विश्वास था। समिति में दो आदमी ऐसे थे, जो जासूसी का काम करते थे। इस कारण बड़े-बड़े लोग अपने संगीन मामले पुलीस में रपट कर के उसी सेवासमिति के हाथ में सौंपते थे। सफलता पाकर जी से प्रसन्न होते और

उनके काम करने वालों को पुरस्कार भी देते थे। आज जो चिट्ठी आई, वह भी इसी तरह की थी । उसमें इतना ही लिखा था कि आप अपने गेरुआ जासूस को फ़ौरन भेजिए। बहुत ही जरूरी काम आ पड़ा है ।

समिति में एक विकट जासूस थे, जो ऐसे ही भेद भरे गूढ़ मामलों में छोड़े जाते थे । वह सदा गेरुआ पहने रहते थे इससे सब लोग उनको गेरुआ बाबा कहा करते थे ।

सुपरिंटेंडेंट ने गेरुआ बाबा को बुलाकर वह चिट्ठी दे दी और लड़के को जवाब देकर बिदा किया ।

इधर गेरुआ बाबा भी रवाना हो गए। जब वह चिट्ठी भेजने वाले मुरलीधर के दरवाज़े पहुँचे, तब देखा कि मुरलीधर शहर से बाहर सदर में रहते हैं । पता मिला कि नौकरी से पेंशन लेकर उन्होंने बड़े लंबे-चौड़े मैदान में तीन महल का मकान बनाया है। मकान के चारों ओर कोई चार बीघे में एक सुंदर बाग़ लगवाया है । बड़े हाल के बगल वाले कमरे में एक सफ़ेद संगमरमर के टेबुल के सामने कुर्सी पर बैठे एक महाशय मानो किसी की राह देखते हैं। उज्वल गोर बदन देखने से ही जान पड़ता है कि कोई भाग्यवान आदमी हैं ।

उन्होंने पूछा—"आप सेवा समिति से आए हैं ?"

"जी हाँ ।"

तब आदर से बिठा कर कहने लगे—"आप से मैं एक

अद्भुत घटना बयान करता हूँ। आप दया कर के इसका पता लगाइए। "

"आप सब आदि से अंत तक कह जाइए।"

"मेरी एक लड़की है। नाम उसका प्यारी है। उसकी शादी दो साल बीते सेठ दुर्गाप्रसाद के लड़के मूलचंद से कर चुका हूँ। लड़की का वहाँ उसके गुणों से बड़ा आदर है। सास ने हीरे-मोती के जड़ाऊ गहने बहुत भेजे थे। हीरे का एक जड़ाऊ हार, एक सिरबिंदी, एक जोड़ा कान का और एक नाक का गहना था। एक बड़ा हीरा जड़ा जूड़े का चँदवा, एक चंपाकली सब मिलाकर तीस हज़ार का माल था। उस सनीचर को न जानें किस कुसाइत में यहाँ पहुँचा कि कल्ह शुक्रवार को रात को सब गायब है।"

गे०—"तो मुझे उन्हीं गहनों का पता लगाना होगा क्या ?"

"जी हाँ, मैं आपको अच्छी तरह ख़ुश करूँगा। आप इन गहनों का पता लगा दीजिए। देखिए यह गहने चढ़ाव के हैं। इनके नहीं मिलने से मेरी कितनी बदनामी है, सो आप समझ सकते हैं।"

अब गेरुआ बाबा ने उन चोरी गई हुई चीज़ों का नाम, दाम, वज़न, रंग सब अच्छी तरह ऐसा लिख लिया कि देखते ही पहचान सकें।

फिर मुरलीधर ने उनसे कहा—"एक बात बड़े अचरज की है कि चोर गहनों का बक्स यहीं फेंक गया है। उसके

देखने से जान पड़ता है कि जोर करके वह खोला गया है। मैंने आदमियों को तो अच्छी तरह घुमा-फिराकर, हिला-डुला कर जाँच लिया है। इनसे कुछ पता नहीं चलता।

गे०—"चिंता नहीं।"

मु०—"दो बात मैं आप से कहना चाहता हूँ। किसी को मैंने अभी तक वह नहीं कहा।"

गे०—"कहिए!"

मु०—पहली बात तो यह कि गहनों के बकस के किनारे पर ख़ून लगा था। मालूम हुआ कि जल्दी में खोलते समय बकस का कोना खोलनेवाले की देह में लगने से ख़ून निकला है और मेरी लड़की की एक लौंड़ी जिसका नाम फेंकनी है, उसके हाथ में भी कट जाने का दाग़ है। यह लौंडी अभी हमारे यहाँ नई आई है। इससे उसपर ज़रा ख़याल रखता हूँ। लेकिन अगर उसी ने चुराया है, तो रंग-ढंग से कुछ भी पहचानी नहीं जाती। दूसरी बात यह है कि मेरी छोटी लड़की, जो नव बरस की है-आज यह एक हीरा मेरे पास लाई है।"

यही कहकर मुरलीधर ने एक हीरा जासूस के आगे निकाल कर दिया।

गेरुआ बाबा ने देखा कि बड़ा चमकदार दामी हीरा है। आकार में छोटा होने पर भी चमक-दमक से वह अँधियारे घर का उजियाला है।

मु०—"इसको वह कहती है कि लौंडी० फेंकनी

के कमरे में बक्स के नीचे मिला है। यह उन्हीं गहनों में से एक में जड़ा था। मालूम होता है, उससे उखाड़ लिया गया है।"

गे०—"अच्छा जिस कमरे में यह सब गहने थे, उसको एक बार हम देखना चाहते हैं।"

अब मुरलीधर गेरुआ बाबा को प्यारी के कमरे में ले गए। उन्होंने कमरे को अच्छी तरह देखा। उनकी समझ में नहीं आया कि भीतर कैसे आदमी आया होगा। क्योंकि बाहर से ऊपर चढ़ने के लिये कुछ उपाय नहीं था। एक खिड़की से एक फव्वारा तीन-चार फ़ुट की दूरी पर पानी फेंक रहा था। लेकिन वह बहुत पतला था। यहाँ तक कि बहुत बोझ भी नहीं ले सकता था। अगर कोई उसपर चढ़ता, तो सब लिए दिए गिर जाता। और कोई भी उपाय बाहर से ऊपर चढ़ने को नहीं था।

सब देख-सुनकर गेरुआ बाबा ने एक बार उन सब लोगों को देखने का इरादा किया, जो उस घर में रहते थे। अब सब लोग बारी-बारी से आने लगे और जासूस उनको कुछ पूछ-पाछ कर बिदा करने लगे।

इससे मुरलीधर की लड़की प्यारी को भी सामने आना पड़ा। दो ही चार बात गेरुआ बाबा ने उससे पूछी। लेकिन उतने ही में प्यारी का चेहरा फक्क होगया था। उसने जासूस से कहा—"मैं तो बहुत हैरान हूँ कि कैसे क्या हुआ! देखिए इस कमरे में एक ही तो दरवाजा है इसके सिवाय जिस

चाभी से यह बंद था, वैसी चाभी भी किसी की नहीं थी। इसके जोड़ की चाभी नहीं है और चाभी मैं ख़ास अपने जेब में रखती हूँ।"

गे०—आप जब रात के आठ बजे पीछेवाली दालान में गई तब आपके गहनों का बक्स कपड़ों के बक्स के ऊपर ही था?"

प्या०—"हाँ!"

इतना सुनने पर गेरुआ बाबा ने दीवार को अच्छी तरह नीचे-ऊपर देखा कि क्या जाने कोई चोर दरवाज़ा हो लेकिन कहीं कुछ भी पता नहीं चला। न छत में ही ऐसा कहीं रोशन-दान या छेद मिला, जिससे बाहर का आदमी भीतर आ सके।

यह सब अच्छी तरह देख चुकने पर फेंकनी लौंडी उनके सामने आई। वह पश्चिमी हिंदुस्तान की रहनेवाली थी। उसका चेहरा घूरकर जासूस ने कहा—"यह तो बतलाओ लौंड़ी कि जब रात के गहनों का बक्स चोरी गया, उससे पहले ही तुम्हारे हाथ में यह जख़्म था या पीछे हुआ?"

सुनते ही फेंकनी का रंग उतर गया। वह कुछ सेकंड तक गेरुआ का मुँह ही ताकती रह गई। फिर उन्होंने पूछा—"जख़्म होने और ख़ून गिरने की बात याद है या नहीं?"

लौं०—"याद क्यों नहीं है साहब?"

गे०—और गहनों के बक्स पर भी ख़ून गिरा है। अच्छा बतलाओ तुम्हारे हाथ पर यह ख़ून कैसे लगा।

लौं०—"एक आलपीन के गड़ जाने से यह ख़ून निकला है।"

इतने में मुरलीधर के मुँह से—बेतहाशा—"अरे तू" निकल गया। गेरुआ बाबा ने रोक दिया। और आप लौंड़ी का हाथ उलट-पलट कर देखने लगे। मालूम हुआ कि एक ज़ख़म है और वह आलपीन या सूई-सी पतली चीज़ से नहीं हो सकता।

अब गेरुआ बाबा ने वह हीरा दिखा कर पूछा—"अच्छा, तुम्हारे कमरे में तुम्हारे बक्स के नीचे यह कैसे गया?"

लौंड़ी अकचका कर कई सेकंड तक वह हीरा देखती रही। फिर चकित होकर कहने लगी—"आपने इसको मेरी कोठरी में पाया है क्या?"

इस समय उसका चेहरा देखकर कुछ और अटकल तो नहीं हो सका। उन्होंने जबाब में कहा—"हाँ, हाँ।"

अब तो लौंड़ी हाथ जोड़ कर आँखों में आँसू भर कर जासूस से बिनती करने लगी—"देखिए साहब! आप की बातों से मालूम देता है कि मुझे ही आप चोर समझ रहे हैं। लेकिन मैं इस मामले में बिलकुल बेक़सूर हूँ। जिसकी कहिए उसकी क़सम खाकर मैं कह सकती हूँ कि मैं बिलकुल बेगुनाह हूँ। बबुई का गहना किस बक्स में वहाँ रहता है, मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। अगर मुझे मालूम हो तो उसे बचाउँगी कि ऐसी नमकहरामी करूँगी। हमारी दोनों आँख फूट जाँय, जो हमको कुछ भी मालूम हो तो।"

प्यारीबाई भी उसी कमरे में मौजूद थी। लौंड़ी की ओर होकर बोली—"नहीं, लौंड़ी पर मेरा पूरा विश्वास है। और वह

उस घर में जायगी कैसे ? ताला बंद था। यह कहें कि चाभी की नकल उसने बनवा ली थी, तो वह बात भी नहीं है।"

जासूस ने चाभी माँग कर देखी, तो वह एक नए ढंग की थी। जब तक उसकी छाप मोम से लेकर दूसरी नकल न तैयार की जाय, तब तक ताला हरगिज़ नहीं खुल सकता।

जब लौंड़ी की पूछ-ताछ हो चुकी, उस कमरे से और सब लोग बिदा कर दिए गए। जासूस ने कहा—"गहनों को बरामद करना और चोर को पकड़ना दो काम हैं और दोनों के लिये समय दरकार है। और यह घटना ऐसी है कि जल्दी पता लगने का ढंग नहीं है। मैं चाहता हूँ कि घर का कोई आदमी घटना का हाल कहीं किसी पर जाहिर न करे। अख़बार वग़ैरह में भी ख़बर न छपे। आप इन सब बातों पर ध्यान रखिए।"

मु०—"अच्छा, फेंकनी को आपने कैसा पाया ?"

गे०—"वह तो हमको बेगुनाह मालूम देती है।"

मु०—"आप ऐसा क्यों समझते हैं ?"

गे०—"मुझे तो ऐसा ही मालूम देता है। ख़ैर, अब मैं जाता हूँ। जब जरूरत होगी, आपसे मिलूंगा या ख़बर दूँगा।"

यही कहकर जब गेरुआ बाबा बाहर निकले, तो बग़ल के एक कमरे से एक बुढ़िया सामने आई। और जासूस को इशारे से बुला ले गई। उसके घर जब गेरुआ

बाबा जाकर बैठे तो उसने पूछा—"आपने फेंकनी से बात चीत की है ?"

गे०—"हाँ, जो कुछ पूछना था, सो तो पूछ लिया।"

बु०—"तो जवाब पाकर आपने उसको कैसा समझा है ?"

गे०—"मुझे तो लौंड़ी बेकसूर मालूम हुई।"

बु०—"तब गहने से वह हीरा कैसे गिर कर उसकी कोठरी में जा पड़ा ?"

गे०—"आपको हीरा की बात पहले से ही मालूम है क्या ?"

बु०—"मैं इसी हीरे की बात नहीं साहब बहुतसी बातें जानती हूँ। किसी से कहा नहीं, आपको गंभीर आदमी देख कर कहती हूँ। क्योंकि यह सब बातें पहले से जाहिर हो जाने पर असल चोर ख़बरदार हो जायगा और माल भी न मिलेगा उस सनीचर की रात बड़ी भयावनी थी। फेंकनी उस अँधेरे में किसी मर्द से बात करती थी। जरा दूर थी, इससे मैं सब बातें तो नहीं समझ सकी लेकिन मर्द की दो-एक बातें सुनने में आईं। वह कहता रहा कि 'प्यारी 'की कौन खिड़की' बगीचे की ओर खुली है।"

इसके बाद कुछ देर तक बुढ़िया चुप रही। गेरुआ बाबा ने कहा—"सब बातें कह जाव, रुकती क्यों हो ?"

बुढ़िया बोली—"उसके बाद की बातें तो समझ में, ठीक नहीं आईं। लेकिन एक और मामला मैं बतलाती हूँ, जिससे मालूम होगा कि दोनों किस गरज़ से वहाँ अँधेरे में मिले थे वह

बात यह है कि कल जब पहर रात बाकी थी तो बगीचे के किनारे किसी की आहट मिली। मालूम हुआ कोई तेजी से दौड़ा जाता है। फिर साँय-साँय फुस-फुस सुनाई दिया। इतना मैंने बहुत धीरे-धीरे सुना—तब अंत में यही हुआ कि जान नहीं बचेगी।"

"उसके बाद ही मैंने देखा कि एक आदमी किनारे-किनारे दौड़ा जाता है। बादल हट गए थे, अँधियारे पाख की दशमी का चाँद निकल आया था। उसी की उजियाली में मैंने उस मर्द को दौड़ते हुए अपनी आँखों देखा था। वह बगीचे के फाटक की ओर गया था। उसका एक हाथ छाती पर था, जिसमें एक चमकता हुआ जड़ाऊ ज़ेवर था। मैंने चाँदनी में उसकी चमक देखी थी, गहना बड़ा क़ीमती था। इसमें संदेह नहीं है।"

गे०—अच्छा,उस आदमी को आप पहचानती हैं या नहीं ?"

बु०—"पहचानती क्यों नहीं, वह थे तो मूलचंद मुरली ही बाबू के दामाद।"

गे०—"ऐं ! प्यारी के मालिक ही थे ?"

बु०—"हाँ, वही थे ।"

गे०—"वही गहना लिए जा रहे थे ?"

बु०—"हाँ, और गहना प्यारीबाई का ही था। मैं सब गहना उनका पहचानती हूँ।"

गे०—"तो क्या आप समझती हैं कि दामाद ही ने यह काम किया है ?"

"मोको समझने-वमझने से कुछ मतलब नहीं। न मैं कभी उसको जानती हूँ कि ऐसा है। लेकिन जो आँखों से देखने में आया, वही आपसे कह दिया है। चोर-साहु आप जानें।"

जब गेरुआ बाबा ने बुढ़िया से यह सुना कि घटना आधी-रात के बाद हुई है, तब दो-चार ज़रूरी बातें पूछने के लिये फिर प्यारी के पास लौट आए। देखा तो पीछे-पीछे वह बुढ़िया भी धीरे-धीरे चली आ रही है।

जब प्यारी के सामने पहुँचे, देखा तो वह उदास आँखों से ताक रही है। चेहरा सकपकाया हुआ है। गेरुआ बाबा ने पूछा—"अच्छा! पाहुन मूलचंदजी कब यहाँ आए थे?"

प्या०—"कल सूरज डूबने पर।"

गे०—"वह कब तक यहाँ रहे। रात भर तो ठहरे रहे न?"

प्या०—"ना, ना! कल्ही रात के दस बजे चले गए। कहते थे जल्दी विदेश जाने की साइत है।"

गे०—"उनके जाने पर कितनी देर पीछे आपके गहने चोरी गए?"

प्या०—"जब वह चले गए, तब मैं नीचे आई और थोड़ी देर पीछे ऊपर गई, देखा तो गहने नहीं हैं।"

गे०—जब आप संध्या को कल्ह नीचे गईं थीं, तब गहना था, इसमें तो कुछ संदेह नहीं है न?

प्या०—नहीं, इसमें कुछ संदेह की बात नहीं है।

गे०—"आपने अपने कमरे से खिड़की की राह बगीचे में देखा था कोई आदमी था ?"

प्या०—"मैं तो साहब खिड़की की ओर नहीं गई, न किसी को देखा ही था।"

गे०—"अच्छा, आपके गहने मूलचंद ने देखे थे ?"

प्या०—"हाँ, देखे थे। और यह भी कहा था कि बहुत दामी हैं।" अब गेरुआ बाबा वहाँ से बाहर निकले। लेकिन आस-पास अच्छी तरह उन्होंने जाँचा। चारों ओर बगीचे में भी घूमे। यह भी देखा कि चहार दीवारी में किधर-किधर को दरवाज़े हैं। लेकिन किसी को उनकी जाँच की कुछ ख़बर नहीं हुई।

यह सब देखकर गेरुआ जासूस सदर सड़क पर जब पहुँचे तो देखा फेंकनी बगीचे के फाटक से निकल कर तेज़ी से सड़क पार कर गई। मालूम हुआ कोई चीज़ छाती पर रक्खे है। लेकिन बड़ी ही सावधानी से छिपाए जा रही है। एक बार उसने वहाँ हाथ रख कर देखा कि है या नहीं। फिर बेफ़िक्र हो कर चलने लगी।

गेरुआ बाबा भी झपट कर उसके पास पहुँचे और रोक कर कहा—"सुन तो फेंकनी! सुन तो।"

"अरे! आप हैं। इधर कहाँ से?" कह कर फेंकनी खड़ी हो गई।

जासूस ने कहा—"यह चोली के नीचे चिट्ठी किसकी रक्खे है रे?"

फें०—"कहाँ, चिट्ठी कहाँ। मैं चिट्ठा काहे का रक्खूंगो। मोको कौन काम है?"

गे०—"चालाकी मत कर फेंकनी। दिखा चिट्ठी किसकी है। बे दिखाए जाने नहीं पावेगी।"

फें०फिर धीरे से बोली-"अरे कोऊ की छिपी चिट्ठी हो तब?"

गे०—"अच्छा लिखा किसने है?"

फें०—"कोऊ तो लिखे ही होगा न?"

गे०—"बता तो कौन ने भेजा है?"

फें०—"अरे यह सब घरू बातें—"

गे०—"अरे बतलाती है सीधी तरह से कि नहीं?"

फें०—"बबुई की तो है।"

गे०—"किसको लिखा है?"

फें०—"अब सब पूछ लेंगे?"

गे०—"बोल! बाल किसको देने जाती है?"

फें०—"अपनी सासरे को लिखिन हैं।"

गे०—"किसको, अपने मालिक को?"

फें०—"हाँ, आप तो जानते ही हैं।"

गे०—"अच्छा, देखें तो क्या लिखा है?"

अब फेंकनी बड़ी सकपकाई। गेरुआ ने कहा—"इधर-उधर मत कर, दे दे सीधी तरह से। जानती है हमको कि नहीं?"

फें०—"जाने की बात नहीं, लेकिन कोऊ के भीतर की बात आप काहे वास्ते देखने को चाहत हैं?"

गे०—"बस सीधे देती है कि हवालात जायगी बोल।"

हाथ जोड़ कर फँकनी बोली—"ना हज़ूर? बबुई से कसम करके आई नहीं तो दिखा देती।"

गे०—"अरे सीधे देती है या हवालात में चल कर देगी? अच्छा चल तेरे कपड़े उतारे जायँगे तब देगी। भलमनसाहत का ज़माना नहीं है।"

जब फँकनी ने देखा कि इन देवता से नहीं बच सकती, तब लाचार होकर दे दिया।

जासूस ने देखा उस पर मूलचंद का नाम लिखा है। झट उसे जेब में रक्खा और कहा—'देख, फँकनी किसी से यह बात कहना मत। थोड़ी देर बाद ठीक समय पर जाना और कह आना कि चिट्ठी दे आई हूं।

अकचका कर फँकनी बोली—"अरे! इतना झूठ! बबुई से सब झूठ जाकर कहूँगी।"

गे०—"नहीं कहेगी तो हवालात ही पसंद है?"

फँ—"बाप रे बाप! हवालात" कह कर फँकनी चौंक उठी।

गेरुआ बाबा ने कहा—"नहीं, तो कहता हूँ सो सुन और जा जैसा कहता हूँ वैसा कर। नहीं तो जेल में भर दूँगा। तुझे समझती है कि नहीं?"

यही कह कर जासूस ने लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें यों लिखा था

"प्यारे! आप तो विदेश जानेवाले हैं, उस में देर न कीजिए। चल दीजिए। जिन चीजों को देख कर आपने खुशी जाहिर की

थी, उनकी बात क्या कहूँ मेरा तो सर्वनाश हो गया । आपको बगीचे से जाती बेर देखा था। सब जानती हूँ। लेकिन अपने अभाग्य की बात क्या लिखूँ, जो होना था सो हो गया।

आपही की

प्यारी"

चिट्ठी पढ़कर रजासूस ने समझ लिया कि जिसको प्यारे लिखा गया है, उसको बड़ी चालाकी से ख़बरदार किया गया है। तो क्या मूलचंद ने ही यह कुकर्म किया है? क्या बात है! मूलचंद भले घर का लड़का है । चाल-चलन में ख़ुराबी की बात अभी तक नहीं सुनी गई । फिर ऐसा आदमी अपनी स्त्री के गहने क्यों चुरालेगा? लेकिन परदेश जाना है, इसके ख़र्च के लिये कुछ दरकार हो तो इतना दामी माल की क्या ज़रूरत है? इसके सिवाय प्यारी ने उनको बगीचे से होकर जाते देखा है। जानती सब है, लेकिन कुछ किसी से जाहिर नहीं करती। जान पड़ता है पति की फज़ीहत और बेइज्ज़ती से डरती है। जो सती है-जिसको पति के सिवाय जगत में दूसरी गति ही नहीं, वह स्वामी का दोष कैसे जाहिर करेगी। ख़ैर, अब देखना है आगे कौन कैसा उतरता है। ऐसी लिखावट को पाकर हाथ से खोना ठीक नहीं।

अब वहाँ से गेरुआ बाबा अपने आफ़िस की ओर चले। वहाँ पहुंचते ही सेवासमिति के सुपरिंटेंडेंट अवधेशनारायण से

भेंट हो गई। अलग एकांत में लेजाकर सब हाल उनसे आदि से अंत तक कह दिया।

अवधेशनारायण ने देखा कि मामला साधारण है। चोर पकड़ने का काम है। इस कारण इसमें गेरुआ बाबा का ही अकेले काम है। यही सोचकर उन्होंने कहा—"तो इसमें तो आप ही सब कर डालेंगे। कहिए आपका संदेह किस पर जाता है।"

गे०—"ढंग से तो जान पड़ता है कि उसी मूलचंद का यह सब काम है।"

सु०—"और फँकनी को आप इसमें नहीं समझते?"

गे०—"हाँ, उसको तो मैं बेलाग देखता हूँ। लेकिन उसके हाथ का ज़ख्म देख कर मैंने उस पर भी नज़र रखने का ठीक प्रबंध कर दिया है।"

सु०—"ठीक है, आप जो कार्रवाई उचित समझते हैं, कीजिए इसके लिये और किसी की कुछ ज़रूरत नहीं है। अगर कभी काम पड़े, तो फ़ौरन कहिएगा। लेकिन एक बात मैं आपसे कह देना चाहता हूँ। मुरलीधर के पहले का हाल इस मामले में दरकार होगा। इस कारण याद रखिए कि दस बरस हुए उनकी स्त्री मर चुकी है। वह उनकी बड़ी प्यारी स्त्री थी। उनको यह बहुत मानते थे। यहाँ तक कि दुलार का फल बुरा हुआ। और इनके मित्रों में से एक के साथ वह निकल गई उस समय वह गर्भिणी थी। नाम उनका देवीबाला था। कुछ दिन तक देवीबाई का पता नहीं लगा। एक बार आपने

पेट से जन्मे हुए एक लड़के की बात उन्होंने मुरली बाबू को लिखी थी। मुरली ने उस लड़के को लाने वाले के लिये बहुत इनाम देने का लोभ देकर ढिंढोरा पिटवाया था। लेकिन कहीं उसके लड़के या उसकी मा का फिर पता नहीं चला। यहाँ भी उन्होंने अपना निवेदनपत्र भेजा था। उसके बाद दो साल हुए उन्होंने अपनी लड़की प्यारीबाई का विवाह किया। ब्याह किसी भले घर के पात्र से किया है। लेकिन ब्याह के थोड़े ही दिन पीछे उनके समधी का देहांत हो गया। अब घर का वही लड़का बेमाथे का मालिक हुआ। बाप ने रुपया पैदा किया था, लेकिन एक तो एकलौता लड़का पिता के आदर-दुलार ने दिमाग़ आसमान पर चढ़ा दिया था। इस कारण जो कुछ बाप छोड़ गए थे, उससे उसका चलना कठिन हुआ। खाली खाना, पहनना तो किसी तरह चल भी सकता था, लेकिन बेटा अपना विलास घटाता नहीं। यह सुना था, इधर का हाल नहीं जानता। इतना और मालूम हुआ कि उसकी कोई नौकरी लगी है या लगने वाली है। मुरलीधर भले आदमी हैं। बतछोड़ धनिकों में उनकी गिनती नहीं है। लेकिन मिज़ाज़ उनका कड़ुआ है। और वह कड़ुआहट इसलिये कि अब उनका हाथ तंग हो चला है। इतनी बातें जानने लायक़ हैं, इसीसे कह दिया है।

आफ़िस से बाहर आकर गेरुआ बाबा ने यह मन में ठीक किया कि कैसे कौन सूत धरकर किधर चलना चाहिए।

इधर-उधर खोज-पूछ करके गेरुआ बाबा ने पता पाया कि

मूलचंद फिशिंग रिक्वेसिटीज़ कंपनी के यहाँ नौकरी करते हैं। लेकिन तलब कम है। काम नहीं चलता। इस कारण दूसरी अच्छी नौकरी की खोज में हैं। लाहौर में एक नातेदार अच्छे दर्जे पर हैं। उनके वसीले से उन्हें एक नौकरी मिलनेवाली है। इसी से जल्द लाहौर जानेवाले हैं। अपने शहर में थोड़ी तलब से भी इसी लिये नौकरी कबूल की थी कि घर पर रहेंगे। दिन भर काम करके थके-माँदे घर तो पहुँचेंगे। लेकिन जब संग के चुहेड़े और चिबिल्लों के साथ उतने रुपए से निबाह नहीं देखा, तब बाहर जाने की सूझी। पहले यह भी समझा था कि धन-कुबेर के यहाँ ब्याह हुआ हैं। वहाँ से भी कुछ मिला करेगा। लेकिन उधर तो आपही हाथ तंग हो रहा था। इसी कारण सब ओर से निराश होकर नातेदार के ज़रिए पश्चिम जाने की तैयारी करने लगे।

३

पहनाव पोशाक से सोलहो आने नई रोशनी के जंटिल-मैन होकर एक महाशय तीसरे पहर को मूलचंद के दरवाज़े पर पहुँचे। कोई है, कोई है कहके पुकारने पर भीतर से एक ख़िदमतगार हाथ का कारिख झाड़न में पोंछता हुआ बाहर आया। उससे पूछने लगे—"बाबू हैं ?"

नौकर बोला—"जी नहीं, आफ़िस गए हैं।

"कब आवेंगे ?"

नौ०-"आते तो पाँच बजे तक हैं, लेकिन आज कुछ ठीक नहीं है।"

"क्यों, ठीक क्यों नहीं ?"

नौ०—"आज उधर ही से बाज़ार करने जायँगे। बाहर जानेवाले हैं ?"

"बाहर जानेवाले हैं सो तो मालूम है, इसीलिये हम आए हैं। उनसे भेंट करना बड़ा जरूरी है।"

नौ०—"कहाँ से आए हैं आप ?"

"आता तो हूँ यहीं से। बाज़ार कितनी देर में करेंगे, क्या मालूम नहीं है ? तुमको कह नहीं गए कि कोई आवेगा ?"

नौ०—"नहीं साहब ! यह तो नहीं कह गए हैं।"

"यह क्या हुआ ! इतनी जल्दी भूल गए। खैर, जल्दी में हैं। लेकिन मुझको तो उनसे भेंट करना ही होगा।"

नौ०—"तो आप आइए बैठिए।"

"हाँ यही ठीक है।" कह कर वह महाशय भीतर गए। वहाँ बैठक में आसन देकर नौकर चला गया। अब तो वह महाशय बिजली की तेज़ी से अपना काम करने लगे। कमरे की सजावट, पयंदाज़ के बाद वाले क़ालीन की कारीगरी, मख़मली कौच की शोभा, दीवारों पर लटकती हुई तस्वीरों की सुंदरता, किसी ने उनको अपनी ओर नहीं फेरा। वह कुर्सी के पास वाले टेबुल के पास जा खड़े हुए और जेब से स्क्रू ड्राइवर निकाल उसके पेंदे का तला खोल डाला। जब दराज बाहर खींचा तब उसके भीतर की सब चीजें सामने आईं। सोने का एक

ठोस पछुआ मिला, जिसके मुँह बाघ के थे और हर मुँह पर असल नीलम की आँखें लगी थीं। एक चंद्रहार देखा, जिसके बीच का चंद्रमा मानो निकल जाने से जगह खाली हो गई थी। लेकिन आस-पास और बहुत से हीरे-मोती, नीलम-पोखराज क़रीने-से जड़े थे। देखने पर वह महाशय मन में कहने लगे—

"फिहरिस्त में जो बयान जेवरों के दिए गए हैं, वे इन्हीं के जरूर हैं। जब इसी का उखाड़ा हुआ हीरा फेंकनी की कोठरी में मिला है, तब क्या यही समझें कि वह भी इसमें शामिल है। लेकिन मुरलीधर तो कहते हैं कि फेंकनी के किसी काम में अभी कुछ पकड़ नहीं मिली है। इसके सिवाय प्यारीबाई का भी फेंकनी पर बड़ा बिश्वास है। जान पड़ता कि है बड़ी ख़बरदारी से इसने गहने चुराए और नीचे फेंक दिए गए हैं। मूलचंद उनको लेकर चलता बना है। फेंकनी के हाथ में घाव है, वह बक्स खोलने ही में लगा जान पड़ता है। ऐसा नहीं हो सकता कि बाहर का चोर इस तरह बंद मकान में आकर चोरी करेगा। घर में फौवारे के ऊपर से गए बिना और कोई उपाय ऊपर चढ़ने का नहीं। ख़ैर, है चाहे जो हो। कुछ तो पता चला। गहना जहाँ का तहाँ ही रहना ठीक है। और गहने कहीं बेचने या बंधक देने का सुभीता तो है ही नहीं। मैं सब सुनार और सर्राफ़ों को ख़बरदार कर ही चुका हूँ। बंधक माल रखनेवालों से बंदोबस्त कर ही दिया है। इसको यहाँ से हटाने में ठीक नहीं है। यह ख़बरदार हो जायगा।"

यहाँ यह बतलाना दरकार नहीं होगा कि यह महाशय जो मूलचंद के बैठक में हैं खुद गेरुआ बाबा जासूस ही हैं। उन्होंने यही सब सोच-विचार कर जहाँ का माल तहाँ रहने दिया और टेबुल का दराज ज्यों का त्यों बंद करके स्क्रू चढ़ा कर बाहर आए। नौकर से कहा—"देरी तो बहुत हुई यार! अभी आए नहीं।"

नौ०—"हाँ, यह तो कही दिया था कि कुछ ठीक नहीं है कि कब आवेंगे।"

"अच्छा मैं जाता हूँ एक चिट्ठी टेबुल पर लिखकर रख दी है। उनसे कह देना एक जरूरी काम के वास्ते गए हैं। चिट्ठी दे गए हैं। होगा तो लौटती बेर मैं मिलता जाऊँगा, तब तक तो वह आ जायँगे।" यही कह कर वह देवता वहाँ से चल दिए।

४

गेरुआ बाबा जब वहाँ से लौट गए, तब थोड़ी देर पीछे मूलचंद अपने घर लौट आए। नौकर ने कहा एक बाबू आपसे भेंट करने आए थे, कहते थे बड़ा जरूरी काम है। आप पछाँह जानेवाले हैं, इसी से आपसे मिलने आए थे।

मू०—"नाम क्या था?"

नौ०—"नाम तो नहीं बता गए और हम भी पूछना भूल गए।

अकचकाकर मूलचंद ने कहा—"अरे कौन आदमी था!

कुछ पता तो चले। हमारे पछाँह जाने से उसका या किसी का कौन मतलब है। मुझे तो कुछ याद नहीं आता।"

नौ०—"अच्छा फिर लौटती बेर भेंट करते जायँगे कह गए हैं और एक चिट्ठी भी लिखकर टेबुल पर रख गए हैं।"

मू०—"तो भीतर भी आए थे? कितनी देर रहे। तू कहाँ रहा?"

नौ०—"बड़ी पहर तक बैठक में आपकी राह देखते रहे। हम तो बैठा के काम को चले गए थे।"

नौकर की पिछली बात सुनकर मूलचंद मन में डरे और उसको डाँटकर बोले—"अरे तू कैसा अहमक है रे। जिसको जानता-ओनता नहीं, उसको घर में बिठाकर कहाँ चला गया था। चाहता तो सब मूस ले जाता न? जब घर में बिठाया तब काहे नहीं बैठा रहा। चला क्यों गया रे बेहूदा कहीं का।"

अब मालिक की डाँट पर नौकर की बोलती बंद हो गई। उसने अपना अपराध समझा और कई दिन पहले पड़ोस के एक मकान से भी कोई बेजान-पहचान का आदमी मालिक के सूने में आकर, पहचानवाला बना और मालिक का नाम लेकर कुछ चीजें ले देकर चंपत हो गया था। सो याद करके पछताने लगा।

अगर वह भी वैसा ही चोर हो और मालिक का कुछ माल लेकर चला गया हो, तब उसकी क्या गति होगी—यही सोचकर नौकर को बड़ी चिंता हुई। उसने सोचा कि चाहे कुछ चीजें

किसी तरह चोरी जाय, उसी पर कलंक लगेगा। ठीक—मजा मारें गाजो मियाँ धक्का खायँ डफ़ालो—का मामला हुआ।

अब नौकर अपना अपराध मान कर हाथ जोड़ मालिक के सामने खड़ा हुआ। उसका भाव देखकर मूलचंद को भी पड़ोस की चोरीवाली बात याद आई। झट जाकर उन्होंने टेबुल खोला और देखा तो सब माल जहाँ का तहाँ जैसे का तैसा रक्खा है।

अब मूलचंद का चित्त ठिकाने आया। क्योंकि पहले यह जानकर बहुत डरे थे कि कोई चोर पता पाकर सब माल हाथ मारने आया था। लेकिन जब सब ठीक ठिकाने पाया, तब बड़ी तसल्ली हुई।

अब इतनी चिंता रह गई कि कौन उनसे भेंट करने आया था, उसका कुछ पता नहीं लगा।

अब नौकर ने वही चिट्ठी दिखा दी। उसे देखते ही वह लिखावट देख कर बड़े चकराए। जरूर कोई ससुराल का आदमी आया था, लेकिन नौकर एसा नासमझा है कि उसका नाम-पता तक नहीं पूछ लिया।

अब चिट्ठी खोलकर पढ़ने पर मूलचंद के मन में बड़ी घृणा हुई। भीतर जो बातें लिखी थीं, उनसे उनके मन में क्रोध और दुःख दोनों हुआ। "सब मैं समझ गई हूँ। बगीचे से जाते देखा है।" क्या खूब ? हमको गहना दिखाने के बाद ही सर्वनाश हो गया। इसका क्या मतलब ! मुझे दिखाने से ही दुःख हुआ

था क्या बात है। मेरे देखने ही की वजह से चोरी गया है, ऐसा समझती है क्या। हमी पर संदेह है क्या ?

ओफ़ ! स्त्री के ऐसे कोमल हृदय में ऐसी घृणा का विचार भी हो सकता है। यह बड़े अफ़सोस की बात है। मन में बड़ा डर हुआ। क्यों मेरी विपद् और मेरे अपमान के कारण डर होता है ?—इसका भी पता नहीं क्या अर्थ है ? जो कुछ लिखना था साफ़ खोलकर क्यों नहीं लिखा। एकबार चलकर सब हाल जानना चाहिए कि क्या बात है लेकिन अगर सचमुच उसके मन में ऐसा विश्वास हुआ है, तब तो हरगिज़ जाना ठीक नहीं है। ऐसा छोटा ख़्याल जिनका है, जिनके मन इतने ओछे हैं, जिनके भीतर इतनी नीचता आ सकती हैं, उनसे मिलना और भेंट करना ठीक नहीं। हाँ ! शादी किया है, तो उसे हटा देना तो नहीं होगा। और अभी तो भरोसा ही नहीं कि उसके मन में ऐसी भावना आ सकती है। अगर किसी तरह बने, तो छिपकर भेंट करना और सब भेद लेना चाहिए। जाना है तो क्या जाने से एक बार पहले ही भेंट करना ठीक होगा। लेकिन चिट्ठी ऐसी है कि जाने का मन नहीं करता।

यही सब हाँ-नहीं और आगा-पीछा विचार कर मूलचंद ने अंत को एक बार ससुराल जाना ही ठीक ठहराया।

जब वह ससुराल पहुँच कर इधर-उधर चुपचाप टहलने लगे और मन में इस बात की चिंता करने लगे कि कैसे स्त्री से चुपके मिलें, तो देखते क्या हैं कि फाटक के पास फेंकनी
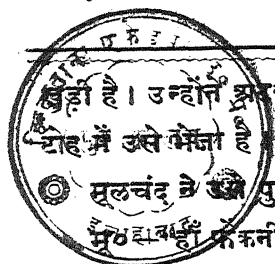
नहीं है। उन्होंने अटकल किया कि उनकी प्यारी ने ही उनकी टोह में उसे भेजा है।

मूलचंद ने उसे पुकारा वह बोली—"अरे। आप हैं।"

मूलचंद—"हाँ फेंकनी तोरी बबुई तो अच्छी तरह से हैं। हम को चिट्ठी लिखा था, उनको डर काहे हुआ?"

फेंकनी को चुप देखकर फिर बोले—"देख अपनी बबुई से बोल देना हम कल्ह पच्छिम जायँगे। अब इस घर में जाकर उनसे भेंट करने का मन नहीं करता। अगर वह हमको कुछ समाचार देना चाहें, तो घर पर बहन से पता पूछवा कर लिखें। और कह देना अपने गहने वग़ैरह इतनी गफ़लत से न रक्खें। क़ीमती चीज़ें यों ही पड़ी रहने से ख़राब हो जाती हैं यह ले जाव अपनी बबुई को दे देना।"

यही कहकर उन्होंने अपने जेब से एक हार निकाल कर दिया। रात की चाँदनी में वह चमचमा उठा। फेंकनी उसे देखते ही चौंक उठी और जोर से चिल्लाकर वहाँ से भागी।

मूलचंद उसका ढंग देख कर बड़े चकित हुए और बार-बार उसे पुकारने और कहने लगे—"अरे क्या हुआ फेंकनी! ले जा अपनी बबुई को दे देना। भागती क्यों है? पागल हो गई है क्या?"

इतने में एक आदमी ने आकर मूलचंद से कहा—"कहिए जनाब, हवास में हैं या कुछ नशा चढ़ गया है। पागल तो नहीं न हुए।"

अब मूलचंद ने पीछे देखा, तो एक विकटाकार आदमी हाथ में भुजाली लिए उनकी छाती पर चलाने के लिये तैयार है।

वह कब आया, किधर से आया, सो मूलचंद ने नहीं देखा। न उसके आने की आहट ही मिली। बात यह कि पंजे के बल बड़ी ही सावधानी से पीछे होकर आया था। अब वह दाँत पीस कर बोला—"कहिए, आप पागल तो नहीं न हुए।"

मू०—"अरे तेरा यहाँ क्या काम है रे बेईमान।"

"अरे धीरे! कोई सुन लेगा।"

मू०—"सुनेगा तो सुने न। मैं तो सुनाना ही चाहता हूँ। तू दूर हो, सामने से चला जा।"

"ख़बरदार! ख़बरदार!!"

अब उस विकट आदमी का चेहरा गुस्से से लाल हो आया। बोला—"देखिए, हमको जल्दी जाना है।"

"तो बोलता क्यों नहीं। बोल, जल्दी बोल! जो कहना हो, सो कह के चला जा! जल्दी से।"

बात यह कि मूलचंद डरपोंक आदमी नहीं थे।

उस दुष्ट के डराने से कुछ नहीं डरे। न एक पग भी पीछे हटे। लेकिन वह आदमी उनके इतना पास आ गया था कि उनको और तरह से ख़बरदार होने का अवसर नहीं था।

वह आदमी बोला—"मैं तो यही कहता था साहब कि आप पागलपना मत कीजिए। ऐसी क़ीमती चीज़ कपड़े में लपेट कर इस तरह खुले तौर से नहीं लाना चाहिए।"

मू०—"नहीं चाहिए तो बला से । मुझे जो काम है सो किया है। तू अपना काम देख, तुझे इससे क्या मतलब है?"

"आप मेरी बात नहीं समझते। मैं कहता हूँ कि यह हार मुझे देकर आप जहाँ चाहिए, ख़ुशी से जाइए। इसकी मुझे जरूरत है।"

मू०"तेरा सिर पहले काट लूँगा, तब कहीं जाऊँगा रे पाजी।"

"बस अब देर नहीं सही जाती। मैं एक-दो गिनता हूँ। जब पाँच कहूँगा और आप इसे मुझे नहीं दे चुकेंगे, तो यही छुरी आपके पेट में पैठ गई होगी।"

मू०—"अरे बदमाश कहीं का। इतना लुच्चई तू करेगा, इतना साहस तेरा है।"

अब वह दुष्ट गिनने लगा—"एक, दो, तीन……"

उसके मुंह से अभी चार नहीं निकला था कि मूलचंद ने तेज़ी से उसके हाथ की छुरी का फल उलट दिया और ज़ोर से दाब कर चाहते थे कि उसकी देह में भोंक दें। लेकिन वह था बड़ा मज़बूत। मूलचंद जो चाहते थे, सो नहीं बना। उसने जोर से कसा और उलट कर उनकी देह में गड़ाया। वह घाव खाकर गिर पड़े। झट वह गुंडा हार लेकर वहाँ से चलता हुआ।

५

उधर जासूस गेरुआ बाबा मूलचंद के मकान से चल कर अपना इरादा पक्का कर चुके कि जो चिट्ठी मूलचंद के टेबुल पर

रख आए थे। उसे पढ़ कर वह क्या करते हैं, यह देखने की बड़ी जरूरत है। इसी ताक में आस-पास टहलते रहे। गहने की चोरी घर के भेदी से घर ही के आदमियों का काम हो सकता है। लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि असल बात जासूस के ध्यान से अभी दूर हो। पहली बात विचारने को यह है कि महल्ले के लोगों से मूलचंद की चाल-चलन का पता लेकर उस पर सोलहो आना विश्वास कर लेना अथवा उस पर कार्रवाई करना ठीक नहीं होगा। क्योंकि सब लोग समान नहीं होते। किसी से उनकी भीतरो मिताई होगी, किसी से उनकी पटती नहीं होगी। जिनसे बनती होगी, वे तो उनकी बड़ाई और गुणों के पुल बाँध देंगे और जिनसे नहीं बनती होगी वे उनकी निंदा करेंगे। क्योंकि पराई निंदा ऐसे दुष्टों के लिये मीठी ख़ुराक है। ये लोग सरसों को पहाड़ ही बनाकर सुनाने वालों के सामने पेश करके रह जाते हैं। ख़ैर। लेकिन बिना जड़ की बातें भी गढ़कर किसी के ऊपर दाग़ देने की कोशिश में पीछे पाँव नहीं रखते। और जब ये लोग यह देखते हैं कि किसी अजनबी से बात कहने का अवसर है, तब तो असल बात से छूआछूत भी नहीं होने देते। कानून की पाबंदी करके फ़ार्म भरना और सीधे-साधे अफ़सरों के आगे कारगुज़ार बन जाना दूसरी बात है। लेकिन असल बात को शत्रु-मित्र आदि के जंजाल से बाहर निकलना और बात है।

जासूस को जब से घटना का हाल कहकर काम सौंपा

गया है, तब से कई बार मूलचंद का पीछा करके उन्होंने देखा है कि कोई संदेह का सूत हाथ नहीं आता । एक बार उनके मन में संदेह आया था कि यह आदमी बड़ा गहरा है । इसी कारण ऊपर से भीतरी भेद नहीं मिलता। या ऐसा भी हो सकता है कि हाथ तंग होने से ऐसा काम किया हो। क्योंकि 'दरिद्र दोषेण करोति पापम्' लेकिन ऐसा होने की जगह बहुत ही कम है। क्योंकि जिस ढंग से मूलचंद काम चला रहे हैं, उस से वह नासमझ नहीं जान पड़ते। लेकिन आदमी बड़े ख़बरदार और चौकस जान पड़ते हैं। बहुत हिसाबी नहीं हैं तो भी जहाँ तक पता चलता है, बहुत देना भी नहीं है। ऐसे आदमी को चोर समझना बुद्धिमान आदमी का काम नहीं है।

इसके सिवाय जिस ऊँची चहारदीवार से गहने चोरी गए थे, उसके देखते बाहर से चोर का आना और माल ले जाना बिलकुल अनहोनी घटना है। लेकिन घर के भेदी से कहाँ क्या नहीं होता। फिर गहनों का बक्स हाते ही में खोला गया है। इससे जान पड़ता है कि चोर भीतर आया था। यह क्या फेंकनी की मदद से हुआ? या यह भी एक चोरिनी ही है। दाई बन कर भीतर इसी काम के लिये घुसी है।

मूलचंद की चाल-चलन ठीक समझ लेने पर इन बातों का अच्छी तरह निर्णय करना होगा। यह जासूस गेरुआ बाबा ने मन में पक्का कर लिया। क्योंकि उन्होंने समझ लिया कि इन बातों का असल भेद जाने बिना उस चोरी को जाँच में

जाना मिहनत बेकार करना है।

यह सब बिचार कर जासूस ने फिर आप-ही-आप कहा—"चाहे जो हो चिट्ठी पाने पर ऐसा अब नहीं हो सकता कि मूलचंद अपनी प्यारी से विना मिले ही विदेश चले जायँ। नौकर के ज़बानी तो मालूम हुआ कि कल ही वह रवाना होने वाले हैं। तब आज ही वह ससुराल की गैल दौड़ेंगे-यह बनी बात है।"

इतने में जासूस देखते हैं, तो मूलचंद बड़ी तेज़ी से नागिनी महल्ले को चले जा रहे हैं। रात का समय होने से पास आकर देखते हैं, तो चेहरे पर चिंता की गहरी छाप है। झट गेरुआ बाबा भी थोड़ी दूरी पर उसका पीछा करने लगे।

जब मूलचंद ससुराल पहुँच कर फेंकनी से फाटक पर बातें कर रहे थे, तब थोड़ी ही दूर पर गेरुआ बाबा भी छिपे थे। लेकिन इतनी दूर पर थे कि दोनों की बातें नहीं सुन सकते थे।

उनका भाव देखकर फेंकनी पर गेरुआ बाबा ने संदेह किया लेकिन बातें जब तक नहीं सुनें, तब तक असल मामला कहाँ समझ सकते थे। जब फेंकनी वहाँ से भागी और वह बदमाश छुरा लिए उन पर चढ़ दौड़ा, तब उन्होंने सब देखा था। लेकिन जब तक वह अपनी जगह से आवें आवें, तब तक वह गुंडा मूलचंद को घायल करके चलता बना।

गेरुआ बाबा ने पास पहुँचकर देखा, तो मूलचंद धरती

पर गिर पड़े हैं। चोट गहरी लगी है। ख़ून जारी है। कमज़ोरी बहुत है। एक दम बेहोश नहीं, किंतु उठ नहीं सकते। जख़्म बड़ा है। गेरुआ बाबा ने पूछा—"क्यों साहब! चोट बहुत तो नहीं लगी है न?"

"देखिए मैं तो देख नहीं सकता। यहीं मारा है हत्यारे ने।" यही कहकर अपना कंधा दिखाया। गेरुआ बाबा कहने लगे—

"क्या कहें चांडाल ने जब छुरा ताना, तब मैंने देखा था। लेकिन यहाँ आते-आते वार करके चला गया।"

मू०—"वह बदमाश गया किधर?"

"वह भाग गया। यहाँ है थोड़े। अच्छा मैं पकड़ूँ, आप उठेंगे?"

ज्यों ही गेरुआ बाबा ने इतना कहा था कि मूलचंद के न जाने कहाँ हाथ पड़ा। वे चिल्ला उठे। फिर धीरे-धीरे खड़े होकर कपड़ा टटोलने लगे। देखा तो हार नहीं है।

पहले जासूस ने समझा कि जख़्म की तकलीफ़ से ही मूल-चंद चिल्ला रहे हैं। कहने लगे—"आप घबराइएँ नहीं। इस पाजी का पता लगा कर हम पकड़ेंगे जरूर। ऐसे चांडाल को सब काम छोड़कर पकड़ना होगा।"

मू०—"हाँ, जरूर इस हत्यारे को पकड़िए।"

गे०—"हाँ, मैं उसको छोड़ूंगा नहीं। उसकी करनी का फल जरूर देना होगा। ऐसा करना चाहिए कि जरूर वह इस पाप का दंड पावे।"

मू०—"क्या कहूँ, मेरी ऐसी चीज़ वह ले गया है कि जिसको मैं जीते जी छोड़ना नहीं चाहता था। उस चांडाल के लिये आप ज. कहिए मैं करने को तैयार हूँ।"

गे०—"क्या चीज़ है साहब ? यह बतलाने में कुछ हरज़ है।"

मू०—"नहीं हरज़ नहीं है। लेकिन ऐसा करना होगा कि इस-से वह माल लेना होगा।"

गे०—हाँ, हाँ ! जरूर ! ! पहले उसको गिरफ्तार करना होगा। फिर पीछे जो-जो करना होगा किया जायगा। इस घड़ी सब से पहला काम है आप के घाव की मरहमपट्टी।"

अभी मूलचंद के कंधे से ख़ून बह रहा था। जासूस ने कहा—"आप का घर यहाँ से कितनी दूर है। मैं चाहता हूँ कि कंधे पर चढ़ाकर आपको ले चलूँ।"

मू०—"घर तो मेरा बहुत दूर नहीं हैं। रास्ते में गाड़ी मिल जाय तो ठीक है। कमज़ोरी बहुत है। मैं चल नहीं सकूँगा।"

गे०—"मैं नहीं चाहता कि आप पैदल चलें। आपको कम-ज़ोरी बहुत है। चलने से फिर आपको बेहोशी आवेगी। आप मेरे कंधे पर चढ़ लीजिए। रास्ते में जहाँ गाड़ी मिलेगी, वहाँ उतर जाइएगा।"

मू०—"नहीं साहब ! बेहतर है आप एक गाड़ी लाइए, क्योंकि कंधे पर वहाँ तक पहुँचना नहीं हो सकता। न मैं पैदल ही चल सकता हूँ। इस कारण चाहे देर हो, लेकिन आप तक-लीफ़ करके गाड़ी यहाँ ले आवें तो बेहतर होगा।

गेरुआ बाबा पंद्रह मिनट पर गाड़ी लेकर आए। उनको सवार कराकर उनके घर पहुँचाया। नौकर को पास वाले डाक्टर के यहाँ भेजा। वह गुडमैन कंपनी के यहाँ से एक डाक्टर ले आया।

डाक्टर ने देखा कि घाव गले के पास है, लेकिन उतना संगीन नहीं है। बोरिकलोशन से धोकर आइडोफ़ार्म छिड़का और बोरिक काटन से पट्टी बाँध दी। साथ ही एक शीशी में स्पिरिटअमोनिया आरोमेट, सिरपट्रिफोलियम कंपाउंड, मेग सलफ़र मात्रा से देकर आठ ख़ुराक बना दिया और कहा—"दिनमें दो बार पिया करें और पट्टी सबेरे शाम बदली जाया करे। घर में रहें। बहुत हिलें-डुलें नहीं।" यही सब कर—धर कर डाक्टर चले गए। जासूस अभी उनके पास ही थे। उन्होंने धीरे से पूछा—"क्यों साहब! उस बदमाश को आप देखें, तो पहचान सकते हैं?"

मू०—"जरूर! जरूर!! उसको देखते ही मैं पहचान लूँगा। मुझे तो पंजाबी गुंडा मालूम हुआ।"

गे०—"तो पुलीस में भी ख़बर दे देना तो अच्छा होगा। आप की क्या राय है?"

मू०—"हाँ, मैं इसके लिये जासूस भी लाऊँगा। लेकिन मैं पहले अच्छा हो लूँ तब। क्योंकि घर में कोई और आदमी नहीं है। महल्लेवालों को भी बुला कर राय लूँगा। इस घड़ी रात बहुत गई है। इस समय कोई आवेगा भी नहीं। अगर आप

पुलीस में ख़बर देने की तकलीफ़ करते जायँ, तो बड़ी दया होगी।"

गे०—"पुलीस में क्या कोतवाली में रपट लिखाने को कहते हैं।"

मू०—"हाँ, लेकिन कोतवालीवालों को तो घूँस खाने के सिवाय और कुछ काम नहीं है। काम के नाम ठनठन गोपाल है। बेहतर हो आप सी० आई० डी० के आफ़िस में जाकर सुपरिंटेंडेंट से इत्तला करें।"

गे०—सी० आई० डी० का आफ़िस तो इस घड़ी बंद होगा। अच्छा सवेरे सब काम छोड़कर हम पहले सी० आई० डी० में रपट लिखा देंगे।"

मू०—"अच्छा सुनिए बंद होगा, तो बेहतर है आप सेवा-समिति में सीधे चले जायँ। उनके यहाँ गेरुआ बाबा का बड़ा नाम है। वही इस काम में हाथ डालेंगे तो ठीक होगा।"

गे०—"अच्छा मैं सेवा-समिति में ही जाता हूँ। इधर ही से ख़बर देता जाऊँगा। उनका आफ़िस तो आठो पहर खुला रहता है। इसमें मेरी भी राय है।"

मू०—"क्या कहूँ, आपको तो मेरे लिये बड़ी तकलीफ़ हुई। आप इतना मेरे लिये करेंगे-इसका कुछ भी भरोसा नहीं था। भगवान ने बड़े भाग्य से आप ऐसे सज्जन को भेज दिया। आपका नाम मैं जानना चाहता हूँ। ज़िंदगी भर आपकी नेकी नहीं भूलेगी।"

गे०—"नहीं! नहीं! ऐसी कुछ बात नहीं। आप पर जो

उस घड़ी आफ़त आई थी कि छुरा लिए हुए कसाई आपको हलाल करना चाहता था। वैसी दशा में पत्थर को भी आँसू आ जावेंगे। भला आदमी कौन होगा, जिससे आपका वह दुःख देखा जाता। मैं अभी जाता हूँ, सेवा-समिति में ख़बर दूँगा यह बिलकुल साधारण बात है। मेरे लिये और जो हुकुम हो। मैं तैयार हूँ। अगर आपको कुछ हरज़ न हो, तो मैं कल्ह सबेरे देखने को आऊँगा।"

मूलचंद ने बड़ी नरमी से उपकार माना और हाथ जोड़ कर निवेदन किया—"आपकी नेकी से मैं कैसे उऋण हूँगा। दुनिया में आप सरीखे विना मतलब के उपकारी हैं, तभी तो यह धरती थम्ही है। नहीं तो इस शहर में कौन किसको पूछता है। पूछता है, तो खाली रुपए को, जिसके लिये एक देवता मेरी यह दुर्गति आपके देखते-ही-देखते कर गए हैं। अहो भाग्य जो इस संकट के समय आपके दर्शन मिले, लेकिन अब मैं नहीं चाहता कि मेरे ही लिये इतनी आप तकलीफ़ करें। हाँ, इधर से जब पधारिए तब दर्शन जरूर दीजिएगा।"

गे०-"नहीं! नहीं!! आप तनिक भी संकोच न करें। न मन में कुछ दूसरा भाव लावें। मैं अच्छी तरह आपके पिता को जानता हूँ। उनके ऐसा परोपकारी इस शहर में कौन है। मुझे आपसे मिलने में बड़ी ख़ुशी हुई है।"

मू०—"नहीं साहब! मैं तो किसी लायक़ नहीं हूँ। न कभी किसी का उपकार किया। भगवान ने ऐसी ग़रीबी दी कि अपना

ही पेट पालना कठिन हो रहा है। अपने को तो मैं संसार का एक भार ही समझता हूँ। नहीं जानें बड़ों के किस पुण्य-प्रताप से आप ऐसे धर्मात्मा का इस अवसर पर दर्शन हो गया। आप को इतना कष्ट देने से मैं लज्जित हूँ। अब और तकलीफ़ देना नहीं चाहता। रात भी बहुत गई है।"

गे०—"आप मेरे लिये कुछ भी चिंता और संकोच न करें। आराम कीजिए। मैं इधर ही से सेवा-समिति में आपके नाम से निवेदनपत्र देता जाता हूँ। आप किसी बात की फ़िक्र मत कीजिएगा। चोट आपकी इतनी गहरी है कि इस घड़ी आराम दरकार है। चुपचाप बेखटके होकर सोइए। दिल में घब-राहट वग़ैरह कुछ भी आने मत दीजिएगा। मैं जाता हूँ। कल्ह सबेरे आऊँगा।

इतना कह कर गेरुआ बाबा वहाँ से चलते हुए।

६

जब गेरुआ बाबा अपने आफ़िस में पहुँचे। बारह बज चुका था। सुपरिंटेंडेंट सामने बैठे सोच रहे थे। देखते ही बोले—"कहिए बाबा जी! कुछ काम बना या नहीं? एक चिट्ठी पड़ी है। जान पड़ता है मुरलीधर के यहाँ से आई है।"

गे०—"काम तो बहुत कुछ रास्ते पर आ गया है। मूलचंद से ख़ासी मिताई हो गई है। उनको एक अच्छे जासूस की ज़रूरत है। वह गेरुआ बाबा को चाहते हैं, उनका नाम और यश

उन्होंने बहुत सुना है। पहचानते नहीं हैं। इसलिये मुझे दूसरे ही रूप में जाना होगा।

इतना कह कर गेरुआ बाबा चिट्ठी पढ़ने लगे। लिखनेवाली वही मुरलीधर की बहन नोखा बुढ़िया थी। उसने लिखा थाः—

"इस चोरी के मामले में आज रात को फंकनी से बे-जान पहचान के आदमी ने जो बातें की हैं, वही लिखती हूँ। दोनों की बात-चीत नीचे देती हूँः—

उसने कहा—"अरे! आ गई मेरी लक्ष्मी?"

फं०—"तुमने कहा था कि आवेंगे तब आती नहीं तो करती क्या।"

"देखा, मैं अपनी बात तुम्हारे सामने कभी झूठी न पड़ने दूँगा।"

फं०—"तो देदो न वह काग़ज़।"

"अरे तो इतनी जल्दी काहे की पड़ी है?"

फं०—"लाए हो या नहीं।"

"वह काग़ज़ मेरी जान के पीछे हैं, मैं उसको कहीं छोड़ता हूँ?"

फं०—"तब देते काहे नहीं?"

"जब जून-बेरा होगी तब न?"

फं०—बाप-रे-बाप! अब जून-बेरा कब होगी। तुमने कहा था कि प्यारी के घर में बगीचे से जाने को किस खिड़की से सुभीता होगा। सो मैंने बतला दिया और तुमने काम कर लिया। तुमने कहा था कि काम कर देने पर और कुछ करना नहीं पड़ेगा। न और कोई फ़रमाइश बाकी रहेगी।

काग़ज़ चुपचाप दे दोगे। अब सब काम कर दिया। मेरी ओर से कुछ कसर नहीं है। तब तुम अपनी बात पूरी करने में क्यों कसर करते हो?"

"तुमने जो गहने बतलाए थे, उनमें से एक तो हई नहीं है।

फें०—"मैंने जो देखा था सो कहा था।"

"दो हार कहा था न?"

फें०—"हाँ, हाँ।"

"लेकिन गबदू तो वह एक नहीं लाया।"

फें०—"कौन चीज़?"

"अरे हार नहीं लाया हार! वह ऐसा बच्चा तो है नहीं कि फेंक आवेगा। वैसी दामी चीज़ कुछ सुई तो है नहीं कि सरक पड़ेगी। इससे जान पड़ता है तुमने इस बार धोखा दिया है। वह गबदुआ गदहा नहीं है। उसी का काम है कि तुमको वहाँ के गारद से निकाला था।"

फें०—"अब तो दादा हमारा नाकन दम आ गया। अब हमसे तुम लोगों का हर हुकुम नहीं सहा जायगा। काग़ज़ दे दो हमारा।"

"तो हमारा वह हार दे दो।"

फें०—"हार-वार मो का जानों।"

"है बड़ी उस्ताद फेंकनी। कहीं छिपा रखा है तुमने।"

फें०—"अरे हुलास बरम्ह जानें, मैंने नहीं छिपाया है। मोरी दोनों आँख फूट जाँय।"

"ठीक कहती है नहीं छिपाया है।"

फॅं०—"अरे! आँख से दुनियाँ में बढ़ कर कौन चीज़ है। उसको भी तो खा लिया। अब क्या चाहते हो भोंकू ?"

"मैं किरिया–कसम पर विश्वास नहीं करता फॅंकना। तुम तो जानती ही हो।"

फॅं०—"वाह तुम्हीं दुनियाँ में अरकी के बन के आप हो। यह सब जो काम किरिया–कसम पर होता है सब झूठ है।"

"झूठ हो चाहे जो हो, लेकिन मैं तो कसम पर विश्वास रत्ती भर भी नहीं करता। बल्कि जो कसम खाता है, उसकी सब बातें झूठी ही समझता हूँ ?"

फॅं०—"कैसे रे भोंकुआ ?"

"कैसे की बात ऐसी कि जो लोग कसम खाते हैं, वह झूठी बात को सच कहकर बतलाने के वास्ते ही खाते हैं। नहीं तो जो सच्च कहता है उसको किरिया खाने की कुछ ज़रूरत नहीं है।"

फॅं०—"चलो-चलो ढेर हुआ। वह हमारा काग़ज़ दो भोंकू। अब देर मत करो! कहे देती हूँ।"

उस बेजान पहचान के आदमी ने काग़ज़ देने के बदले कुछ इशारे की सीटी बजाई और झट वहाँ से भाग कर कहीं छिप गया। थोड़ी ही देर में मेरे भाई के दामाद मूलचंद वहाँ पहुँचे। अब फॅंकनी से उनकी बात होने लगी। लेकिन थोड़ी ही देर पर फॅंकनी चिल्लाकर वहाँ से भाग गई। क्या हुआ कुछ मालूमे नहीं हुआ। मूलचंद भी फाटक से चला गया।

यह सब देखकर मुझे मालूम देता है कि चोरों का एक दल है, मूलचंद उनका सरदार है। फँकनी भी उसमें मिली हुई है। गबदू और भोंकू दो गुंडे मूलचंद के साथ हैं, जो उसी दल के अगिया-बैताल हैं, जो मुझे मालूम हुआ, सो आपको लिख दिया है। अब जो कुछ असल बात हो, उसका पता आप लगा लीजिए।"

चिट्ठी पूरी पढ़ चुकने पर जासूस ने समझ लिया कि मूल-चंद के हाथ से जो हार गुंडों ने छीन लिया है, उसी की बात हो रही है। मूलचंद किसी के दल में नहीं हैं, न गबदू और भोंकू उनके साथी ही हैं। ऐसा होता, तो वह भोंकू मूलचंद का ख़ून करने की कोशिश हरगिज़ नहीं करता।

यहाँ जासूस गेरुआ बाबा को बड़ी चिंता हुई। पहले उन्हों-ने सुपरिंटेंडेंट से सब हाल सुनकर यही समझा था कि साधारण चोरी का मामला है और उनको मिहनत करके चोर को पकड़ना होगा।

सुपरिंटेंडेंट ने भी यही समझ कर अकेले उनको काम सौंपा था और मन में विचारा था कि यह तो गेरुआ बाबा के लिये बाएँ हाथ का खेल है। उनको इसमें और कुछ मदद या सहायक दरकार नहीं होगा। लेकिन ज्यों-ज्यों गेरुआ बाबा आगे बढ़ते गए, त्यों-त्यों मामला बड़ा गहरा, बड़ा पेचदार और बड़ा संगीन होता गया।

सुपरिंटेंडेंट साहब से उन्होंने कहा—"यह मामला जैसा

हम लोगों ने पहले समझा था, साधारण चोरी का नहीं है। इसमें बड़े-बड़े पेंच हैं।"

सुपरिं०-"जी हाँ, हमें भी ऐसा भरोसा नहीं था। समझा था कि साधारण मामला है। यह बात सही है कि चोरी बहुत कम की नहीं गई है, तो भी मामला चोरी ही का है। लेकिन अब इतने दिन से आप इसी में उलझ रहे हैं, तब तो देखता हूँ बड़ा पेंचदार मामला है। आप कुछ सहायता देनेवाले चाहते हों, तो ख़ुशी से ले सकते हैं।"

"नहीं साहब! सहायक अगर दरकार होगा, तो मैं आप माँग लूंगा। मुझे असलियत निकालना है और जब आप कोई सहायक इसमें देंगे, तो हमारे काम में ख़लल होगा। लाभ नहीं होगा, जब सहायक चाहिएगा—मैं निवेदन करके किसी को चुन लूँगा।"

"अच्छी बात है। आप अपना काम कीजिए।" यही कहकर सुपरिंटेंडेंट ने गेरुआ बाबा को बिदा किया।

७

रात के तीन बज गए थे। मूलचंद के दरवाज़े पर कई बार पुकारने पर दरवाज़ा खोलकर उनका नौकर बड़बड़ाता हुआ बाहर आकर बोला—"कौन है! रात भर सोने नहीं पाया। ज्यों ही आँख लगी कि फिर किवाड़ भड़भड़ाने लगा। क्या काम है? इतनी रात के जो चिल्लाकर कपार खाए जाते हो।"

अब तो पुकारनेवाले ने कहा--"अरे तुम्हारे मालिक के काम के वास्ते आए हैं। ख़बर दो।"

नौ०—"वाह ! बड़े कामवाले आप। मालिक को अभी डाकृर कह गए हैं सोने के वास्ते! हम हरगिज़ नहीं जगा सकते। ऐसी संगीन चोट लगी है कि जगाने से उनका बड़ा नुक़सान होगा।"

"अच्छी बात है। अगर जगाने से नुक़सान होगा, तो सोने दो। मैं उनका नुक़सान नहीं चाहता। उनके भले के वास्ते आया हूँ। जाव तुम भी सो रहो। मैं यहीं बैठता हूँ। सबेरे भेंट करूँगा।"

नौ०—"तो हम किवाड़ खोलकर तो नहीं छोड़ देंगे। आप बाहर उसी चौकी पर बैठिए। जब सबेरा होगा, तब भेंट हो जायगी।"

"सबेरा नहीं सबेरा का बाप हो, तो भी उनको जगाना मत ख़बरदार ! जब आप ही जागें, तब ख़बर देना।"

नौ०—"अजी आप ही न तब क्या हम उनको जगाने जाते हैं। जगाने को लाट साहब आवें, तो भी हम नहीं जगा सकते और तो कोई किस खेत की मूली है।"

"जाव तुम सो रहो गुस्से में हो। मैं यहीं बाहर चौकी पर बैठता हूँ। तीन तो बज गया है। घंटे, डेढ़ घंटे में सबेरा होता है।"

नौकर चुपचाप चला गया। वह आदमी वहीं बाहर को

चौकी पर बैठा रहा।

जब सवेरा हुआ, नौकर ने आकर किवाड़ खोले। देखा, तो वह महाशय चौकी पर ही बैठे हुए हैं। हाथ में रामडंडा है। पाँव में सलीमसाही जूता, सिर पर लखनऊ सूईकाढ़ की दुपलिया टोपी है। बदन चौड़ी मुहरी के पंजाबी कुरते से ढका है। धोती सादी किनारी की साफ़-सुथरी देखकर नौकर मन में लज्जित हुआ कि ऐसे भले आदमी को नाहक़ मैंने नींद में उतनी बात कही और भीतर न बिठाकर बाहर चौकी पर डाल दिया। फिर अभी जो उस दिन विना जाने-पहचाने को भीतर जाने दिया था, उस पर मालिक ने जो डाँट-डपक की थी, वह याद आई। तब मन का पछतावा जाता रहा। और पूछने लगा—"आप का नाम क्या है? कहाँ से आए हैं? मालिक पूछते हैं।"

जवाब में उन्होंने कहा—"कह दो मैं सेवा-समिति से आया हूँ। गेरुआ बाबा ने मुझे भेजा है। नाम है मेरा मेटूलाल।"

नौकर ने कहा—"वाह नाम भी पाया तो मेटूलाल! ऐसे साफ़, सुथरे और सुघड़ आदमी और नाम मेटूलाल! तब तो अच्छा हुआ, जो रात के मैंने भीतर नहीं सोने दिया। क्योंकि सब कुछ आप मेट ही जाते हैं। तब इसको कहाँ याद रखते।"

मे०—"क्या कहूँ मा-बाप ने जो नाम दिया, उसी को न ज़िंदगी भर ढोना होगा, तुम्हारा नाम क्या है भैया?"

नौ०—"मेरा नाम पूछ कर क्या कीजिएगा। जाता हूँ

मालिक से पहले आपकी खबर दे आऊँ ।' यही कह कर वह झट भीतर गया। लेकिन फिर तुरंत लौट कर कहने लगा—"क्या कहूँ साहब! मालिक की तो नींद लग गई है। थोड़ा बैठिए! जब उठेंगे तब बात होगी।"

मे०—"ओ अभी कहते थे मेरा नाम पता पूछते हैं और फिर कहते हो, नींद लगी है यह कैसी बात!"

नौ०—"बात ऐसी कि ज्यों ही कुनमुनाने लगे, मैंने कहा एक आदमी पहर रात के तड़के से आकर बैठे हैं। उन्होंने कहा क्या नाम है? कहाँ से आए हैं? तभी मैं पूछने के वास्ते आप के पास आया। जब लौट कर गया तब देखा? तो फिर नींद लग गई है। इससे जगाया नहीं है। बैठिए, कुछ जल्दी तो नहीं है न।"

मे०—"जल्दी तो है, लेकिन उनको तकलीफ़ देकर मैं अपनी जल्दी का काम भी पूरा नहीं करना चाहता। और सच पूछो तो भाई हमको उन्हीं के आराम होने की जल्दी है। अच्छा आओ तुम भी बैठो, बातें करें, तब तक जागेंगे न?

वह नौकर आकर पास ही बैठ गया। उन्होंने पूछा—"कितने दिन से बाबू के यहाँ नौकरी करते हो भैया? तलब क्या है?"

नौ०—"तलब तो दस रुपया है; लेकिन खाली पिनसिन है। काम-वाम कुछ नहीं है, धोती धोना, नहलाना, कपड़े पहनाना, बस!"

मे०—"और कितने आदमी नौकर हैं, तुम्हारे यहाँ ?

नौ०—"आदमी तो हैं चार-पाँच। एक रसोई बनाने वाली मिसराइन हैं, एक सौदा-सुलुफ के वास्ते कहार है, एक दरवाज़े पर के वास्ते सिपाही है और एक जनाने में रहने वाली लौंड़ी है। गौ को घास लाने वाला, दूध दुहने वाला और सानी-पानी करने वाला एक ग्वाला है।"

मे०—"तुम कितने दिन से नौकर हो ?"

नौ०—"हमको तो अभी बरस पूरा नहीं हुआ। अबकी दसहरे में साल पूरा होगा।" इतने में भीतर से पुकार सुन कर नौकर दौड़ गया। बात बीच ही में टूट गई। मेटूलाल ने जो बात ढीली थी। उसका मतलब भी पूरा नहीं हुआ।

८

पहले जिस चिट्ठी की बात हम कह आए हैं। जिसे लिख कर सेवा-समिति में भेजा गया था और सुपरिंटेंडंट अवधेश-नारायण ने गेरुआ बाबा को आफ़िस में पहुँचते ही दिखाया था। उस चिट्ठी को तो नोखा ने जब लिख कर एक लड़के के हाथ सेवा-समिति में भिजवा दिया और आप सोने के लिये जाते समय मन में चिंता और दुःख करने लगी कि भाई का इतना सर्वनाश हो गया, जिससे मेरा निबाह होता था, जिसकी साथ में मैंने ज़िंदगी के बाकी दिन काट ले जाने का भरोसा किया था, उसकी यह गति हुई, तब मेरा दिन दूभर हो जायगा।

इस समय वह बालक लौट कर आया और चिट्ठी पहुँचा आने का समाचार कहकर बिदा हुआ। नोखा को फिर चिंता चढ़ी। फिर अपनी दशा बिचारने लगी कि इतने में किसी के रोने-चिल्लाने की आवाज़ आई। फिर लोगों की दौड़-धूप और पाँव का धब-धब सुनाई देने लगा। नोखा भी घबड़ाकर कमरे से बाहर आई। जिधर से आवाज़ आई थी, उसी ओर चली।

प्यारी के कमरे में पहुँच कर देखती है, उनके बरामदे में सब पहुँचे हैं। मुरलीधर भीतर हैं। उनको घेर कर चारों ओर नौकर लौंड़ी खड़ी हैं। एक ओर प्यारी बेहोश पड़ी है। फेंकनी पास में बैठी उसे चेत कराने के लिये सेवा कर रही है। औरों को हटाकर जब नोखा भीतर गई, तब दशा देखकर चौंक पड़ी। घर की सब चीज़ें तितर-बितर पड़ी हैं। पलंग की मसहरी कट-फट कर गिरी है। जान पड़ता है कमरे में कुछ लोगों ने आपस में बड़ी लड़ाई और धींगा-मस्ती की है। बेहोश होकर जो प्यारी गिरी हैं, उसके उघरे हुए दोनों हाथ जख़्मी हैं। सिर के बाल बिखर कर धरती पर लोट रहे हैं। उसके उज्ज्वल ललाट पर भी रक्त का गोल दाग़ पड़ा है। और पास ही कमरे की फ़र्श पर भी वैसा ही दाग़ पड़ा है। फेंकनी मुट्ठी बाँधे पास ही बैठी है। वह चेहरे से बहुत डरी दिखाई दे रही है। रह-रह कर लंबी साँस लेती और चिल्लाती है।

मुरलीधर कुछ देर तक कमरे में खड़े अवाक होकर यह

सब देखते रहे। अंत को बेटी की वह दुर्दशा देख जो मन में उद्वेग और व्याकुलता हुई थी, उसके कुछ ठीक होने पर—"हा भगवान! बुढ़ापे में यह भी होना था।" कहा। अब सब लोग उनके दुःख में हमदर्दी दिखाते हुए भीतर आए। चेहरे से जान पड़ा कि सब लोगों को हाल जानने की चिंता है।

मुरलीधर ने लंबी साँस लेकर कहा—"काहे बेटी! क्या हुआ! बोलो! बूढ़े बाप का मुँह देखो! बोलो बेटी!" यही कहते हुए उन्होंने कन्या का सिर अपनी गोद में उठा लिया। लेकिन झट बहन नोखाबाई उनकी गोद से लेकर प्यारी का सिर अपनी जाँघ पर रख कर बैठी।

उसके बाद सन्नाटा रहा। नोखा ने प्यारी की नाड़ी पर हाथ रक्खा। देखा तो सूत की तरह कभी-कभी अपना वेग जता देती है। आँखें खुली हैं। लेकिन मुर्दे की तरह स्थिर और कांतिहीन नहीं हैं। गंड-देश मलीन और सूखे हुए नहीं हैं। दो एक जगह लाली भी है।

नोखा ने सब देखकर वहाँ आई हुई स्त्रियों से कहा—"मरी नहीं! अभी जान है उठाकर पलंग पर रख देना ठीक होगा।"

अब वह उठाकर पलंग पर रक्खी गई। मुरलीधर उसके सिर के पास झुक कर खड़े हुए कि ओंठ वगैरह हिलें या आखों की पलकें गिरें-उठें। लेकिन देर तक वह आँखें वैसी ही खुली रहीं।

कुछ देर और बीतने पर आँखों में प्राणभाव आया और ओंठ काँप उठे। फिर धीरे-धीरे हिलने लगे। पलकें भी चलायमान हुईं।

मुरलीधर और झुककर पास गए और कुछ सुनने के लिये वैसेही झुके रहे। थोड़ी देर पर बहुत धीरे-धीरे उन्होंने सुना—"वह गया ?"

मु०—"कौन गया बेटी ! किसको कहती हो ?"

प्या०—"वही शैतान ?"

मु०—"यहाँ तो कोई शैतान-वैतान नहीं है।"

प्या०—"नहीं है ! सच कहते हैं बाबूजी ?"

मु०—हाँ बेटी। मै तुम्हारे पास खड़ा हूँ तब तक यहाँ किसका डर है ? और कौन है यहाँ ? तुम्हारे सब अपने तो हैं।

अब प्यारी का चित्त मानो ठिकाने आया। अपने दोनों हाथ उठाकर उसने पिता का हाथ पकड़ लिया और फिर चुप हो गई।"

ऐसा जान पड़ा कि दो ही चार बातें कहकर वह थक गई है। इस कारण देर तक बहुत शांत रही।

थोड़ी देर पर उसने आँख खोलकर कमरे में चारों ओर देखा और अकचकाहट दिखाकर फिर रोकर बोली—"जान बची। मेरे गहने कहाँ ?"

मु०—"कहती क्या हो बेटी ! गहने कहाँ रक्खे हैं ?"

अब फिर प्यारी दुखी हुई तो फिर शिथिल हो पड़ी। मुरलीधर ने कहा—"ज़रा पानी तो लाना। ललाट से लोहू अभी तक बह रहा है।"

इतना सुनते ही आदमी दौड़ पड़े। इधर नोखा बगल वाले कमरे में गई और एक चिट्ठी सेवा-समिति को लिखकर द्वारपाल के हाथ देती हुई बोली—"जल्दी जा। कहीं रास्ते में ज़रा भी न ठहरना।"

उसके चले जाने पर मुरलीधर ने कहा—"बड़ी आफ़त की बात है। पुलिस में ख़बर देना चाहिए।"

नोखा ने कहा—"ना-ना! थाना पुलिस का नाम नहीं।"

मु०—"क्यों? ख़बर देने में क्या हरज है? कहीं कुछ असल बात का पता नहीं लगता। लड़की बेहोश पड़ी है। कुछ बतला नहीं सकती। मैं तो समझता हूँ, कोई चाँडाल मेरी प्यारी की जान लेने आया था। ज़रूर पुलिस में इत्तला देकर उस हत्यारे को पकड़वाना चाहिए।"

नो०—"अभी पुलिस का कुछ काम नहीं है।"

मु०—"पुलिस बिना दूसरा कौन यह सब करेगा?"

नो०—"यह सब काम सेवा-समिति ही से होगा वे ही लोग जासूसी करके इसका भेद लगावेंगे। सरकार भी उनको बहुत मानती है और सब लोग उन लोगों के काम से बड़े खुश हैं।"

मु०—"अच्छी बात है। हम भी इस सलाह को पसंद करते हैं। बहन वहीं ख़बर भेजो। मेरा मतलब यही है कि चाँडाल का पता लगाकर पकड़ना और उसे उसकी करनी का फल देना चाहिए।"

नो०—"मैं वहीं चिट्ठी अभी भेज चुकी हूँ।"

मु०—"अच्छी बात है बहन। तुमने बहुत अच्छा किया। इस आफ़त में मेरा तो चित्त ठिकाने नहीं है। मैं समझ ही नहीं सकता कि क्या करना चाहिए? कई बार जब संकट पड़ा है, तुमने बड़ी ही समझदारी का काम किया है। अच्छा अब ज़रा प्यारी को देख लो तो इसका जख़म कैसा है? बहुत संघातिक तो नहीं है?"

अब नोखा ने प्यारी के पास जाकर उसको अच्छी तरह देखा और पानी से बहते हुए ख़ून को धोकर जख़म साफ़ कर दिए। जहाँ कपड़ा बाँधने लायक़ था वहाँ कपड़े बड़ी सावधानी से बाँध दिए। फेंकनी ने इस अवसर पर बड़ा काम किया। नोखा ने अच्छी तरह सब देख-भाल और अपनी जाँच पूरी करके भाई से कहा—"नहीं संघातिक नहीं है।"

मु०—"कैसे यह सब हुआ, तुम कुछ समझती हो बहन?"

नो०—"अभी जब तक यह आप नहीं उठती, तब तक की सब बातें खाली अटकल की होंगी। लेकिन प्यारी ने जो धीरे से कहा था कि गहने क्या हुए, उसका मतलब कुछ समझे हो?"

मु०—"ना बहन, वह मैंने सुना तो, लेकिन कारण समझ में नहीं आया कि क्या बात है?"

नो०—"बात ऐसी-वैसी नहीं बहुत संगीन है। फिर यह दुनिया बड़ी टेढ़ी जगह है। बहुत सम्हल कर चलना होगा। पुलिस में ऐसे मामले देने से बदनामी होती है। जहाँ तक हो इसमें छिपे-छिपे काम करना होगा। और असल बात जानना

और असल अपराधी का पता लगाकर उसको दंड दिलाना यह तो हम लोगों का असल कर्तव्य ही है। लेकिन सब काम ज़रा समझ-बूझकर करना ठीक होगा। सेवा-समिति प्रजा की ओर से होने पर भी उसके काम ऐसे हैं कि सरकार भी ख़ुश है। और सरकार ख़ुश क्यों न हो, बिना तलब तनख़ाह के जो लोग काम कर रहे हैं और काम अच्छा कर रहे हैं, उन पर सरकार को ज़रूर ख़ुश होना ही चाहिए। सरकार तो प्रजा ही का काम उचित रूप पर होने के लिये इतना ख़र्च करती है। लेकिन इतने पर भी जब काम वैसा नहीं होता, तब इसमें काम करनेवालों की, भूल है। सरकार क्या करेगी? वह तो काम करने के वास्ते दाम देती है और लेकर जो लोग नमकहरामी करते हैं और प्रजा का काम नहीं करते—वे ही अपराधी हैं। ये लोग इसी देश के आदमी हैं। सरकार को जहाँ तक करना है वह करती है। लेकिन इस देश के आदमी ही जब यहाँ की प्रजा को सताकर अपना पेट भरते हैं और यही अपना करतब समझते हैं, तब इसका कौन उपाय है। उसके लिये प्रजा-पालक सरकार का ख़ुश न होना ही अचरज की बात है। यही सब बिचार कर सेवा-समिति की नेकनामी के भरोसे पर हमने वहीं खबर दी है। देखें वहाँ से कोई आदमी आ जाय और तब तक प्यारी को भी होश हो जायगा। तब सब भेद खुल जायगा।"

—:❀❀✻:—

६

जब नौकर नोखा की चिट्ठी लिए हुए सेवा-समिति के दरवाज़े पर पहुँचा। तब सब लोग चले गए थे। सुपरिंटेंडेंट अवधेशनारायण बाहरी बरंडे में टहल रहे थे। सर झुका हुआ था। मन-ही-मन कुछ चिंता कर रहे थे।

जब वह आदमी पहुँचा, तब उनकी चिंता का सोता रुक गया। उसको खड़ा देखकर पूछा "कौन है?"

"मैं बाबू मुरलीधर के मकान से आया हूँ। गेरुआ बाबा को खोजता हूँ।"

सु०—"वह तो बाहर गए हैं।"

"उनके वास्ते एक चिट्ठी लाया हूँ।"

सु०—"अच्छा चिट्ठी दे दो। जब वह आवेंगे, उनको दे देंगे।"

"नहीं, सुपरिंटेंडेंट साहब को देने का हुक्म है। दूसरे को नहीं दे सकते।"

सु०—"मैं ही सुपरिंटेंडेंट हूँ। लाओ चिट्ठी।"

"बहुत अच्छा" कहकर उसने प्रणाम किया और चिट्ठी देकर अलग खड़ा हो गया।

सुपरिंटेंडेंट ने वह चिट्ठी खोलकर रोशनी में पढ़ी, उसमें यों लिखा था :—

"बाबा जी! आप तुरंत आइए। प्यारी को कोई अधमरा करके उसके कमरे में छोड़ गया है। वह बेहोश पड़ी है। आप

आने में देर मत कीजिए।

नोखा।"

पढ़ कर उन्होंने कहा—"अच्छा तुम जाव, मैं गेरुआ बाबा को जल्दी से भेजता हूँ।"

जब वह प्रणाम करके चला गया,तब सुपरिंटेंडेंट ने अपने नए बालदूत को बुलाया। यह अभी थोड़े दिनों से सेवा-समिति में आया था। लड़का नव ही दस वर्ष का होगा, लेकिन चतुराई, तेजी, और मुस्तैदी देखकर सुपरिंटेंडेंट ने उसे अपना ख़ास बालदूत बनाकर रक्खा था। गुप्त संवाद कहीं भेजने की जल्दी और ज़रूरत होती थी, तब उसको बुलाकर सौंपते थे।

उस ज़रूरी चिट्ठी को लिफ़ाफ़े में डालकर उन्होंने नए लिफ़ाफे में बंद किया और ऊपर मेटूलाल का नाम लिखकर बालक के हाथ पर रक्खा और मूलचंद के यहाँ लेजाकर गेरुआ बाबा को देने का हुक्म दिया। यह भी समझा दिया कि बड़ी ख़बरदारी से देना, जिसमें कोई ताड़ न सके।

लड़के ने—"बहुत अच्छा" कह कर लिफ़ाफ़ा हाथ में लिया और अपना ख़ाकी कुरता पहना। उसने डाक के बॉय मेसें-जर को इधर से आते-जाते देखकर उन्हीं के ऐसा कुरता और दुरंगी मुरेठा सुपरिंटेंडेंट से हठ करके बनवाया था। बात यह कि सुपरिंटेंडेंट महाशय उसका बड़ा आदर करते थे। उसको होनहार देखकर अपने लड़के के समान प्यार से पालने लगे थे। जिस चीज़ के लिये मचलता था, उसको वह चीज़ देते

थे। बॉय मेसेंजरों के ऐसा कुरता और मुरेठा भी उसको बनवा दिया था। उसके वास्ते बढ़िया कमीज़ और किनारीदार काला फ़ीता पाड़ की धोती भी ख़रीद दी थी। मारवाड़ी पगड़ी भी बनवा दी थी। बालक सबका सेट बनाकर क़ायदे से अलग-अलग रखता था। जब जैसी मौज आवे, तब तैसा वेष बनाकर रहता था शहर में जाता था।

उस घड़ी सुपरिंटेंडेंट का हुक्म सुनकर उसके मन में बॉय मेसेंजर बनने की सूझ गई। बस हाथ में रसीद बही और लिफ़ाफ़ा लेकर बाइसिकिल पर सवार हो गया और मूलचंद के दरवाज़े पर पहुँचा। तो देखा ख़िदमतगार बैठा लंप साफ़ कर रहा है और दरबान तिपाई पर बैठा हुक्का गुड़-गुड़ा रहा है। उसने लंप साफ़ करनेवाले को पास बुलाकर पूछा—"यहाँ कोई मेट्टू बाबू आए हैं।"

"नाम तो नहीं मालूम, लेकिन एक मेहमान आए हैं। क्यों क्या काम है बच्चा?"

"अच्छा ज़रा लंप रख दो और जाव बाबू से कहो उनसे भेंट करने को एक आदमी आया है।"

"वाह जी! तुम हो तो छोटे, लेकिन बातें बड़ों की-सी करते हो।"

"तुम जाव जल्दी। इस घड़ी छोटे-बड़े को पहचान मत करो। पहले सरकारी काम करो, पीछे बात।"

"तुम क्या कोई सरकारी काम करने आए हो?"

"हाँ ! हाँ ! तुम इसको नहीं समझोगे। जल्दी जाव, उनको ख़बर दो।"

लंप साफ़ करनेवाला उठकर भीतर गया और थोड़ी ही देर में मेट्रूलाल आ पहुँचे। सामने ही तार का हरकारा देखकर उन्होंने उसको रसीद बही में सही की और तार लेकर खोला। भीतर का लिफ़ाफ़ा देखकर कुछ चौंके। लेकिन वह भाव बड़ी सावधानी से भीतर ही दबाकर बोले-"अच्छा जाव।"

वह बालक "नमस्ते" कहकर चलता हुआ। उसकी चलन और उसका चेहरा देखकर मेट्रूलाल मन में कहने लगे "लड़का जैसा सुशील है, वैसा ही चतुर है। रूप भी भगवान ने अच्छा दिया है। उसका चेहरा किस आदमी से मिलता है, याद नहीं आता!"

थोड़ी देर में आप-ही-आप उन्होंने कहा—"हाँ! मुरलीधर से इसका चेहरा बहुत मिलता है। ठीक जैसे उनका शार्ट एडिशन हो। जैसे कोई बहुत बड़ा फ़ोटो सामने रखकर उस को नगीने में लगाने के लिये छोटी कापी उतारी जाय।"

१०

मालिक को ख़बर दो कि बड़ी रात से आकर कोई बैठा है। आप सोते रहे, इसीसे भीतर नहीं आने दिया। तब वह उस पर बिगड़े और बोले कि "क्यों—ख़बर नहीं दी तुमने और भीतर नहीं आने दिया क्यों?"

इतना सुनते ही मूलचंद के पास से भेटूलाल उठकर चले आए। फिर उनके जो बातें हुईं वह सब तो हम लिख ही आए हैं।

अब नोखा की चिट्ठी में लिखी घटना की ही उन्हें सबसे अधिक चिंता थी। इसीसे एक बहुत ज़रूरी काम आ पड़ने की बात कहकर उन्होंने मुहलत माँगी और झट वहाँ से चल पड़े।

मू०—"नसीब की बात ऐसी है कि इस समय गेरुआ बाबा आप तो नहीं आ सके। लेकिन आपको उन्होंने भेजा, सो आपको भी किसी अधिक ज़रूरी काम के वास्ते जाना पड़ता है। अच्छा तो आप जब वहाँ से छुट्टी पावें, तब ज़रूर कृपा करें।"

तुरंत आने का वचन देकर भेटूलाल वहाँ से बिदा हुए और एक जगह अकेले में जाकर गेरुआ बाबा बन गए।

जब बंशीधर के मकान पर पहुँचे, वहाँ उनकी राह ही देखी जा रही थी।

जब भीतर गए। मुरलीधर और आदमियों को बिदा करके नोखा और फेंकनी के साथ प्यारी की खाट के पास ही बैठे थे। देखते ही बोले—"अरे! आपपर फिर आफ़त आई!"

मु०—"क्या कहें बाबा जी! दिन बिगड़ते हैं, तब ऐसा ही होता है। देखिए आपके सामने ही सब है। इस बार तो सब चौपट हुआ देखते हैं।"

घर में चारों ओर तेज़ नज़र डालते हुए गेरुआ बाबा ने कहा—"अच्छा, घटना तो बतलाइए।"

मु०—"मैं तो बाहर के कमरे में था साहब ! भीतर से चिल्लाहट सुनकर आया, तो मालूम हुआ कि प्यारी के कमरे से आवाज़ आती है। लेकिन दरवाज़ा बंद था। जब ज़ोर किया, तब कब्जा टूट गया। भीतर घुस आया, तो सब चीज़ें तितर-बितर देखीं। लड़की नीचे ख़ून से डूबी पड़ी थी। नहीं जानता किस चाँडाल ने यह दशा की है।"

उनकी बात सुनकर गेरुआ बाबा ने उस घर के भीतर बाहर चक्कर दिया और सब देखकर खिड़की खोल डालने पर भीतर-बाहर देखा। देखते-देखते दरीची पर ख़ून से लद-फद एक जगह छोटे पाँव का निशान मिला।

खिड़की के पास एक फ़ौवारा देखकर उसको अच्छी तरह जाँचा, तो मालूम हुआ कि उसपर आदमी नहीं चढ़ सकता। अगर कार्निस पर भार देकर उतरा हो, तो भी फ़ौवारे पर ज़ोर पड़ेगा और वह बोझ से टूट जायगा। लेकिन फ़ौवारे पर भी एक जगह ख़ून भरे पाँव का दाग़ लगा है। इससे जान पड़ता है ज़रूर वहाँ चाँडाल ने पाँव रक्खा था।

मु०—"ढंग से तो यही दिखलाई देता है। कि फ़ौवारे पर से वह आकर उतरा है। लेकिन उनके भार से वह टूटा नहीं यह बड़ा आश्चर्य है।"

गे०—"इन दोनों जगहों पर पाँव रखा है।"

मु०—"आप क्या समझते हैं ?"

गे०—"मैं समझता हूँ, जो इसपर चढ़ा था, वह आदमी नहीं है।"

अकचकाकर मुरलीधर ने कहा—"क्या आदमी नहीं है।"

इसी समय फेंकनी बोली—"अरे बबुई को चेत हुआ है।"

मुरलीधर पलंग के पास पहुँचे। गेरुआ बाबा जहाँ थे वहीं रहे। इसी समय नोखाबाई ने गेरुआ बाबा के पास पहुँचकर धीरे से कहा—"अब जान पड़ता है। इस चोरी का भेद खुलेगा। एक बार प्यारी को कुछ चेत आया था। तब वह बोली रही कि अब समझ गई कि गहना उसका कहाँ गया है?"

उसी समय मुरलीधर ने गेरुआ बाबा को बुलाया। जब वह पलंग के पास पहुँचे, तो फेंकनी उठकर मसहरी की आड़ में जा खड़ी हुई। उसका एक हाथ साड़ी की आड़ में जाकर तर्जनी और अँगूठे के सहारे किनारी की बत्ती बना रहा था, दूसरा आँचल सम्हाल धड़कती हुई छाती को मानो दाबे था। चेहरे से डरी हुई जान पड़ती थी।

मुरलीधर जब बेटी के पास पहुँचे। प्यारी ने उनका हाथ पकड़ लिया। उन्होंने उसका सिर सम्हालकर तकिए पर ठीक कर दिया और ललाट पर हाथ फेरकर प्यार से बोले—"काहे बेटी! अब कैसा है। कुछ बल आया है। कुछ कहोगी?"

डरती हुई प्यारी ने चारों ओर देखकर कहा—"अब भी डर लगता है!"

मु०—"ना बेटी! डरो मत। यहाँ तो हम लोग मौजूद ही

हैं। देखती नहीं गेरुआ बाबा भी सामने हैं। डर किस बात का। अगर तुम कह सकती हो, तो कुछ हाल तो बतलाओ! क्या बात हुई!"

प्यारी ने मुँह से तो कुछ नहीं कहा। लेकिन वह एक बार गेरुआ बाबा की ओर और फिर पिता की ओर देखकर चुप रह गई।

गेरुआ बाबा ने भाव समझकर निडर करने के लिये कहा—"बोलो बेटी! सब हाल कहो! डरने का क्या काम है?"

प्यारी ने बहुत थोड़े में कहा—"जब मैं दरवाज़ा बंद करके सोने चली; तब देखती हूँ तो भीतर दराज के पास एक भयानक आदमी खड़ा है। उसपर जो गहने का खाली बक्स था उसको उलट-पलट कर देख रहा है। उसके ऐसा विकट तो कभी नहीं देखा था दादा।"

मु०—"वह कैसा आदमी था बेटा!"

प्यारी—"ना बाबूजी आदमी नहीं था।"

धीरे से गेरुआ बाबा बोले—"मैं तो पहले ही कह चुका हूँ।"

प्यारी—"लेकिन आदमी ही की तरह हाथ-पाँव था। सीधा खड़ा रहा। चेहरा देखे से वहाँ डर लगता रहा। दोनों आँखें आग की तरह जल रहीं थीं। देह भर में रोएँ थे। जान पड़ता था, जैसे बनमानुस हो।"

सब लोग चौंक कर बोल उठे—"बनमानुस?"

प्या०—"मैंने समझा कि उसको पकड़ लूंगी। दौड़कर धरने गई, तो लगा नोचने-बकोटने। फिर वही बक्स उठा कर कपार पर ऐसा मारा कि लहू-लोहान हो गया। ख़ून आँख में पड़ा। मेरी आँखें बंद हो गईं, फिर उसने बक्स से मारा। अब मैं चिल्लाई तो, लेकिन गर्मी चढ़ गई। फिर मैं नहीं जानती कि कहाँ क्या हुआ? लेकिन बनमानुस मेरा गहना ले गया है।"

गेरुआ बाबा बनमानुस की बात सुनकर मन में सोचने लगे—"यह बात अलबत्ते सोचने की है। कि यह बनमानुस किसका है और किसने इसको यह सब सिखलाया है? फिर यह भीतर क्यों आया? जब एक बार चोरी कर ले गया था, तो किसी और गहरे मतलब से आया था?"

यही सब मन में सोच बिचार कर गेरुआ बाबा ने मुरलो-धर से पूछा—"अच्छा आपका या आपकी लड़की का इस शहर में कोई दुश्मन है?"

मु०—"मैं तो जहाँ तक जानता हूँ इस शहर की बात कौन कहे, इस दुनिया में हम लोगों का कोई दुश्मन नहीं है।"

अब जासूस को बाहर जाने की ज़रूरत पड़ी। उनको कुछ देख-भाल और सलाह करना था। जब कमरे से निकले। नोखा भी प्यारी के कमरे से अपने कमरे को गई।

जिस समय बनमानुस की बात पर सब लोग अकचका रहे थे: उसी समय फेंकनी मसहरी की आड़ में खड़ी मन

ही मन सब समझ रही थी। लेकिन मुँह से कुछ कह नहीं सकती थी। गेरुआ बाबा की कनखी उसीपर थी। वह उसका रंग-ढंग उसके चेहरे का भाव और उसकी लंबी साँस सब देख-सुन रहे थे।

जब सब लोग वहाँ से चले गए। तब फंकनी झट पलंग के पास आकर घुटने के बल बैठी और सिसक-सिसक कर रोने लगी।

प्यारी ने कहा—"रो मत फँकनी? मुझे वैसा संघातिक घाव नहीं लगा है। खाली डर गई थी और डर से ही ऐसी दशा थी। अब डर छूट गई है। खिड़की जो खुली है, इसे बंद कर दे। सर्दी मालूम देती है।"

विसूरती हुई फंकनी ने झट उठकर खिड़की बंद कर दी। गेरुआ बाबा मुरलीधर के साथ आकर बाहर बैठे।

बाबा ने कहा—"देखिए सेठजी! आप घबराइए मत। घटना तो ऐसी ही भयंकर है, लेकिन तो भी विपत में धीरज ही से काम होता है। 'धीरज धरिए, तो उतरिए पारा। नाहीं त बूड़ सकल परिवारा।' आपके घर पर जो लगातार दो वारदातें हो गई हैं, इसमें डकैती ही नहीं, बल्कि चाँडालों का मतलब आपकी लड़की की जान लेने का मालूम देता है।"

मु०—"मेरी लड़की का कौन ऐसा दुश्मन है? फिर उसके दुश्मन का भी दुश्मन बात क्या है? कुछ समझ में नहीं आता।"

गे०—"देखिए, मेरी बुद्धि में जो आता है, वही मैं आपसे

कहता हूँ। लेकिन मैं निश्चय होकर कोई बात नहीं कह सकता।" कि यही बात पक्की है। लेकिन इतनी बात जरूर है कि जिस बनमानुस ने आपकी कन्या के गहने चुराए हैं, उनका कोई मालिक है। उसने उसको स्त्रियों का गहना चुराना सिखलाया है। बनमानुस फ़ौवारे पर सुगमता से चढ़ उतर सकता है। उसके लिये कुछ कठिन नहीं है और आपकी लड़की के गहने इसी तरह चोरी गए हैं। लेकिन इतनी ही बात बीच में अड़ती है कि वह बनमानुस फिर भीतर क्यों आया है। चोरी ही करने का मतलब था, तब तो वह चोरी कर ही चुका था, फिर आने-जाने की ज़रूरत क्या थी ? उसका फिर आना और लड़की को घायल करना कह रहा है कि उसके मालिक का मतलब आपकी लड़की की जान लेना था। दुनिया में किसका क्या मतलब है और कोई किस गरज से घूम रहा है, सो नहीं कहा जा सकता। लेकिन काम देखकर उसके करनेवाले की गरज का अटकल किया जाता है। इसके सिवाय एक बात यह है कि आपकी लड़की जीती है। जब डाकू सुनेंगे तब जरूर समझ लेंगे। आपने उसी के ज़ुबानी पता पाया है कि गहने बनमामुस के ही हाथ से चुराए गए हैं। उससे बेहतर यह कि आप यह जाहिर करें कि डाकू घर में घुस कर माल असबाब ले गए हैं और लड़की को भो इस तरह जख़्मी कर गए हैं कि उसकी जान निकल गई है। बस इसीको सुन कर वे सब बेफ़िक्र हो जायँगे। और समझेंगे कि असल बात

किसी को जाहिर नहीं हुई है । लेकिन लड़की को यहाँ रखने से काम नहीं बनेगा। किसी न किसी तरह असल भेद खुल ही जायगा। बेहतर है कोई विश्वासी आदमी प्यारीबाई को दूर लेजाकर रक्षा करे। तब सब लोग समझेंगे कि सचमुच लड़की मर गई है । एक दवा ऐसी खिला दी जाय कि लड़की मुर्दे कि तरह हो जायगी । यहाँ तक कि डाक्टर भी नहीं पहचान सकेगा। दाह करने के लिये बाहर ले चलकर वहाँ जो करना होगा, सब कर दूँगा। लेकिन यह काम बड़ी ख़बरदारी से करना होगा और मरघट तक भी अपने बड़े बिश्वासी आदमियों के साथ ले जाना होगा । आप ख़ुद रहिएगा और बाकी मेरे अपने आदमी रहेंगे । ऐसा नहीं करने से चोर नहीं पकड़ा जा सकता। और आज रात तक अगर आसामी नहीं पकड़ा जायगा, तो मामला बड़ा गहरा हो जायगा ।

पहले तो मुरलीधर इस काम में राज़ी नहीं होते थे, लेकिन बहुत कुछ समझाने-बुझाने पर उन्होंने हामी भरी । गेरुआ बाबा यह कह कर विदा हुए कि थोड़ी देर में दवा लेकर आवेंगे।

कुछ देर बीत जाने पर गेरुआ बाबा बग्घी करके फिर मुरलीधर के मकान पर पहुँचे। उनके हाथ में दवा देकर उसी गाड़ी पर लौट गए ।

आफ़िस में पहुँच कर उन्होंने दिन की ज़रूरी बातें पाकेट बुक में लिख लीं और डायरी भर कर विश्राम करने चले गए।

११

सबेरा होते ही मुरलीधर के मकान पर कुहराम पड़ गया। फेंकनी भोंक पाड़कर रोने लगी। नोखा भी हाय बेटी! हाय प्यारी! करने लगीं। मुरलीधर लड़की के कमरे में जाकर शोक के मारे अधीर होने लगे और घर के आदमी भी सब उदास हो पड़े। डाक्टर बुलाए गए। उन्होंने जाँच कर देखा और कहा—"यह तो मामला ख़तम हो चुका है।"

उनकी बात सुनकर मुरलीधर ने रात की सब घटना बयान करते हुए कहा—"रात को डाका पड़ा था। एक डाकू मेरी प्यारी को घायल करके भाग गया है। सिर से ख़ून बहुत देर तक जाता रहा। लेकिन तो भी ऐसी उम्मेद नहीं थी कि जान निकल जायगी। इसीसे डाक्टर उस रात को नहीं बुलाया। लेकिन जब लड़की होश में आई, तब बहुत डरी थी। रह-रह कर चौंक उठती थी। देखा तो उतने डर की बात नहीं है। इसीसे फेंकनी लौंडी को यहाँ करके हम लोग चले गए। उस समय बारह बजे थे। घंटे भर बाद आकर मैं फिर देख गया। और एक ठंढी दवा भी पिला गया था। उससे कुछ मगज ठंढा हुआ भी था। कुछ घंटे बीतने पर लौंडी ने ख़बर दी कि लड़की एक दम काठ की तरह पड़ी है। हिलती-डुलती तक नहीं, न साँस ही चलती है। तब आपको बुलाया है। डाक्टर ने कहा—"आपके ख़ानदानवालों का दिल बड़ा कमज़ोर है।

यही कारण है कि यह हालत हुई है। नहीं तो कोई भी ज़ख्म उतना संघातिक नहीं है। लेकिन दिल की हरकत बंद होने ही से यह लड़की मरी है। मैं सर्टिफ़िकेट देता हूँ। सबेरे ही मैं कॉरोनर से मिलूँगा। आप उसकी चिंता मत किजिए। लेकिन उस चॉडाल डाकू को पकड़ने की कोशिश कीजिए। ज़रा दाह-कर्म में जल्दी मत कीजिएगा। कॉरोनर की रिपोर्ट होने पर संस्कार करना होगा।"

यही सब बातें समझाकर डाकृर चले गए।

१२

जिस सड़क पर मुरलीधर का मकान है, उसीके मोड़ पर एक छोटी किंतु बड़ी साफ़-सुथरी तिन मंज़ली अटारी चिक-चिका रही है। उसी में एक स्त्री रहती है। उमर अढ़तालीस -पचास बरस की होगी। उनके साथ एक लौंड़ी और एक टहलुआ है। रंग-ढंग से जान पड़ता है कि उस स्त्री का समाज से कुछ स्नेह-नाता नहीं है। कोई उसके घर न आता है, न वह किसी के काम-प्रयोजन में जाती है। उस स्त्री के महल्ले में दुष्ट-बदमाशों की बस्ती नहीं है।

रात के ग्यारह बज गए हैं। वह स्त्री अपने कमरे में लौंडी के साथ बैठी महाभारत की कथा पढ़ रही है। कुंती और उनके पाँचों पुत्रों की कथा चल रही है। कर्ण उनकी कन्या-वस्था के पुत्र हैं। कुरुक्षेत्र के युद्ध के समय कुंती ने अपने

पुत्रों को वह समाचार दिया; यही बातें हो रही थीं कि तीसरे मंज़िल से चिल्लाहट सुनाई दी। लेकिन मालूम हुआ कि चिल्लाहट आदमी की नहीं है। उसके डेकरने से बड़ी घबराहट हुई। बार-बार वह चिल्लाहट सुनाई देने लगी। स्त्रियाँ चौंक उठीं। जब वह स्त्री आवाज़ ताड़कर ऊपरवाली कोठरी में पहुँची। तो देखा दरवाजे पर भोंकू लाठी लिए खड़ा है और भीतर एक भयंकर जानवर है। हाथ-पाँव आँखें सब आदमी-से हैं, मुँह बंदर से मिलता है, शरीर में देह भर रोएँ हैं और वही भोंकू की लाठी खाकर डेकर रहा है।

स्त्री—"अरे! यह तुम क्या कर रहे हो? यह कैसा भालू है? मैं घर में रहती हूँ और कुछ नहीं जानती। यह तो आदमी की आँख है दादा। इसको लेकर तुम यहाँ करते क्या हो? आज तक तुमने इसकी कुछ बात मुझसे नहीं कही। यह कैसी बात है? क्रोध में आकर स्त्री यही कहती हुई अपने कमरे को चली गई। भोंकू भी उसके पीछे गया।

जब वह अपने कमरे में पहुँची। लौंड़ी को बाहर जाने का इशारा करके भोंकू भीतर गया और कहने लगा-"मालकिन।"

वह चौंककर बोली—"अरे! यहाँ तू किस वास्ते आया है?"

हाथ जोड़कर भोंकू बोला—"ज़रा बैठ जाव मालकिन। कुछ बातें कहना है।"

स्त्री भोंकू का भाव देखकर चौंकी। उसके चेहरे पर डाह और बदला लेने का भाव था। स्त्री बैठ गई, कुछ दूर पर भोंकू

भी बैठ गया। वह बोला—"यह तो आप जानती हैं कि मैं ही मालिक हूँ और सब मेरे हाथ में हैं?"

स्त्री—"रुपया-पैसा सब तुम्हारे हाथ में रहा। उसका क्या था? मैं क्या नहीं जानती? सब तुम्हीं जानते होगे।"

झोंकू—"आप तो जानती ही हो। गुनधर साहु मरती बार बहुत धन छोड़ गए थे। वही सब आपको मिला है?"

स्त्री—"यही मैं जानती हूँ। और आज तक यहाँ के इस मकान का किराया वग़ैरह सब उसी रुपए से ख़र्च तुम चलाते हो। लेकिन कितना रुपया या कितने का प्रामेसरी नोट कहाँ जमा है और उसका सूद कितना मिलता है, यह सब मैं कुछ नहीं जानती। इतना जानती हूँ कि मरने से पहले तुम उनके पास थे। उसके बाद से बराबर यहीं हो। तुमको मैं उनका नौकर जानती हूँ। लेकिन सब रुपया-पैसा तुम्हारे हाथ है। तब नौकर काहे को, तुम तो मालिक ही हो। जब मेरा रुपया होने पर भी मेरे हाथ में कुछ नहीं है, तब मैं तो कुछ नहीं हूँ।"

झोंकू—"अच्छा! अब यह सब धन चला जाय, तो क्या आप भीख माँगती फिरोगी मालकिन?"

स्त्री—"यह तुम क्या बकते हो झोंकू? मैं तुम्हारी बात कुछ भी समझ नहीं सकती। तुम्हारा ढंग देखने से मुझे बड़ा डर लगता है।"

झोंकू—"मेरे हाथ में सब है, मैं जो चाहूँ, सो कर सकता हूँ।"

स्त्री—"तो जो तुम्हारे धर्म्म में आवे, सो करो मैं क्या करूँ?"

भोंकू—देखिए गुनधरसाहु, जिनके साथ आप इस शहर से भाग गईं थीं वह बड़े सुंदर जवान और भले आदमी थे। काशी जाकर भी यह बड़े भलेमानुस के जामे में रहे। बड़े ठाट से उनका वहाँ चलता रहा। आप वहाँ उनकी घरनी और आपके वह पति थे। चाल-चलन जैसी अच्छी, रूप भी वैसा ही सुंदर देखने में था। लेकिन वह भीतरी बड़े भारी डाकू थे।

स्त्री—"डाकू थे?"

भोंकू—"हाँ, आप जो जानती थीं कि बार-बार काशी किसी काम के लिये जाते हैं; लेकिन वह काशी का बहाना करके कभी काशी, कभी पटना, कभी प्रयाग या और जगह जाकर अपने गरोह में मिलते और डाकूपना करके माल लाते थे और उसी से अपना काम चलाते थे। मैं भी उन्हीं के गरोह का एक डाकू हूँ। जब पिछली बार गए, तब पुलीसवालों के पंजे में पड़ गए। लेकिन पुलीसवाले उन्हें पकड़ नहीं पाए, दूर से गोली मारकर घायल किया। लेकिन उसी चोट से उनकी जान चली गई। मरती बार मुझसे गंगा-माता और विश्वनाथ की कसम देकर, आपको मेरे ही ऊपर सौंप गए। हम लोग कसम खाकर जो बात देते हैं, उसको जान रहते तक निवाहते हैं। मैंने आज तक उसका निवाह किया है। आपको तो उन्होंने मरती बार यही कहा था कि शिकार में गए थे। एक शिकारी की गोली मुझे लग गई है?"

स्त्री—"हाँ, मुझसे तो मरती वेर यही कह गए।"

अब भोंकू की बात सुनने पर स्त्री को बड़ा डर हुआ। उसने मन में कहा—"बाप रे बाप! अभी न जानें क्या कहेगा।"

भों०—"यहीं आपको उन्होंने धोखा दिया। उनको गोली शिकारी की नहीं, पुलीसवालों की लगी थी।"

स्त्री—"अगर यही बात सही है, तो हम लोगों का ख़र्च कैसे चलता है?"

भों०—"सब मैं ही चला रहा हूँ और कहाँ से आता है?"

स्त्री—"तो इतना रुपया तुम कहाँ से पाते हो?"

भों०—"सब हमारा गबदू लाता है।"

स्त्री—"गबदू क्या इस बनमानुस का नाम रक्खा है?"

भों०—"हाँ मालकिन! यही गबदू हम लोगों का ख़र्च चलाता है। आपके धर्म्म-कार्य्य, पाठ-पूजा सबका ख़र्च यही जुटाता है। मैंने इसको ख़रीदकर सब सिखलाया है। अब यह जो काम करता है, वह आदमी से हरगिज़ नहीं हो सकता। यह बड़ा चालाक़ आदमी है। हमारे इशारे पर काम करता है। कभी भूलता नहीं।"

स्त्री—"ऍं!"

भों०—"आपने समझा नहीं मालकिन! बात यह है कि यह गबदू एक चालाक़ चोर है।"

स्त्री—"चोर है?"

भों०—"हाँ, जहाँ कहें इशारे पर पहुँच जायगा, जिसको

इशारा करें, उसीको ले आवेगा। वह बड़े आदमियों के घर में घुसकर बहू-बेटियों के गहने चुरा लाता है। मैं सोने के गहनों को गला पीटकर चौरस करके सर्राफ़ के यहाँ बेच देता हूँ। उनमें कोई हीरा लाल जड़े हों, तो उनको उखाड़ कर, काट तराश कर, नया करके जौहरियों के हाथ ख़र्च करता हूँ। इसी तरह तो दिन काटता हूँ।"

स्त्री—"तो हम लोग चोर की चोरी से अपना काम चलाते हैं?"

भों०—"हाँ मालकिन! असल बात तो यही है।"

स्त्री—"बस करो भोंकू! मैं ऐसे पैसे को प्रणाम करती हूँ। इससे भीख माँगना ही अच्छा है।"

इतना सुनने पर भोंकू उस घर से चुपचाप बाहर हुआ। स्त्री बहुत देर तक अपने बिछौने पर करवट बदलती रही। बहुत रात गए पर उसे नींद आई थी। इस कारण सबेरे देर से जागी। फिर लौंडी को बुलाकर गंगा नहाने गई।

स्नान करके लौटती बेर कुछ दिन चढ़ आया। रास्ते में मुरलीधर का मकान पड़ा। उस घर के सब आदमी शोक में थे। भीतर से स्त्रियों का रोना सुनाई देता था। लौंड़ी ने दरवान से जाकर पूछा—"क्या हुआ है।" उसने कहा—"मालिक की लड़की प्यारी को डाकुओं ने मार डाला है।"

दरवान से लौंड़ी की यही बातें हो रही थीं। और मालकिन रास्ते पर खड़ी थी। दरवान ने कहा—"इसी रात को बिचारी

लड़की मर गई है। बुरी तरह से घायल कर गए थे। डाकूर आते-आते मर गई। वही एक लड़की थी और कोई घर में नहीं है।"

उसी समय दूसरे महल की खिड़की का पर्दा उठा। मुरलीधर सामने दिखाई पड़े। उनका चेहरा मलीन था।

मुरलीधर ने देखा मालकिन और लौंड़ी पास-ही-पास खड़ी बातें करती और खिड़की की ओर ताक रही हैं। मालकिन ने मन में कहा—"अरे! यह क्या दशा है? यह तो जीते हैं। मुरलीधर ने दोनों को देखकर परदा फिर गिरा दिया और धीरे से भीतर चले गए।" ऐसा जान पड़ा कि जो कुछ उन्होंने देखा, उससे दिल पर बड़ी चोट आई।

उधर लौंड़ी ने सब हाल जाकर मालकिन से कहा। डाकूओं के हाथ से प्यारी का मारा जाना सुनते ही उसके भीतर बड़ी बेदना-सी हुई।

१२

जासूस गेरुआ बाबा सबेरे ही उठे। उन्होंने मुरलीधर के घर जाने का ठीक किया। क्योंकि कॉरोनर की जाँच हो जाने पर लाश मिलेगी। इन सब कामों में बड़ी ख़बरदारी दरकार थी। अपनी मदद के लिये उन्होंने मनलायक बिश्वासी आदमी आफ़िस से चुन लिए!

जब आफ़िस से बाहर निकले तो देखा, कि एक बालक हर-

कारा एक छोटे कद वाले आदमी के साथ सामने से आ रहा है। उस अनोखे नाटे आदमी को देखते ही गेरुआबाबा को बाबू मूलचंद के घायल होने की बात याद आई। उनके मन में आया कि वह आदमी भी वैसा ही था, जिसने उनको घायल किया था। लेकिन जल्दी से वह आफ़िस के पास आकर उस लड़के को छोड़ दिया और आप झट चला गया। वह लड़का आफ़िस के बरंडे की ओर अलसाया हुआ धीरे-धीरे चलता था।

उन दोनों को देखकर गेरुआ बाबा वहीं टहलने लगे। उनको पहचान कर लड़के ने प्रणाम किया। गेरुआ बाबा ने लड़के से पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"मेरा नाम तो नगीना।"

गे०—"रहते कहाँ हो ?"

"पासही खपरैल के मकान में रहता हूँ।"

गे०—"तुम्हारे माँ-बाप हैं ?

इतना सुनने पर उसने सर झुका लिया। आँखों से कई बूंद आँसू निकल कर टपक पड़े। भारी आवाज़ से बोला—"अब तो नहीं हैं लेकिन—

गे०—"जो आदमी साथ आया, वह तुम्हारा कौन है ?"

"मुझे मालूम नहीं।"

गे०—"तुमसे वह क्या कहता था ?"

"राजी-खुसी पूछता रहा और यह भी पूछता रहा कि महीना बढ़ा है या नहीं ?"

गे०—"तुमसे यह बात आज ही पूछता था ?"

"नहीं जब मिलता है, तब पूछता है। कभी कुछ तकलीफ़ होती है, तो देता भी है। जब मेरी नौकरी नहीं लगी थी, तब इसने मेरी बहुत मदद की है। इसी उम्र में मैंने बड़ी-बड़ी ठोकरें खाई हैं। बहुत जगह नौकरी की है। जान पड़ता है नव बरस से मैं ऊपर का हूँ।"

गे०—"कैसे समझा कि तुम नव बरस के हो ?"

"यही आदमी कहता है। इसी से सुना है।"

गे०—"नाम जानते हो इसका ? कहाँ रहता है सो मालूम है।"

"नाम तो जानता हूँ भोंकू है, लेकिन मालूम नहीं कहाँ रहता है। कभी-कभी आता है। फिर गायब हो जाता है।"

गे०—अच्छा अगर तुम इसका ठिकाना जाँच कर हमको बतला दो, तो हम पाँच रुपया तुमको मिठाई खाने के वास्ते देंगे। बोलो लोगे ?"

"अच्छा देखेंगे" कहकर लड़का चला गया। गेरुआ बाबा फिर आफ़िस लौट गए। और अपने अफ़सर अवधेशनारायण से बात करके बाहर चले। इस बार सीधे मुरलीधर के मकान की ओर रवाना हुए।

आधी रात के समय जब गेरुआ बाबा मुरलीधर की बहन लोखा को पाकर उनके मकान को ओर गए। तब उनके मकान से थोड़ी दूर पर मोड़ के पास एक मकान के सामने

एक सिपाही पहरेवाले से भेंट हुई। वह उस मकान के सामने खड़ा चकित होकर देख रहा था, गेरुआबाबा ने पूछा—"यहाँ क्यों खड़ा है ?"

सि०—"इस मकान के ऊपर वाली कोठरी से एक अजीब चिल्लाहट आई है।"

उसकी बात सुनकर गेरुआ बाबा ने और तो कुछ नहीं पूछा; लेकिन उस मकान का खयाल करके चले गए। जब लौटे, तब उन्होंने देखा कि दो स्त्रियाँ उसमें घुस गईं। एक की आयु अधिक थी, ढंग से मालकिन जान पड़ती थी, दूसरी लौंड़ी। उन्होंने बगलवाले दूकानदार से पूछा, तो वह कुछ पता नहीं दे सका।

आज जब मुरलीधर के मकान पर पहुँचे, उनको उदास पाया। उन्होंने समझा कि इसकी घटना से ऐसा हुआ होगा। गेरुआबाबा को आदर से आसन देकर बोले—"आज मैं आप से एक बात कहना चाहता हूँ। मैंने आपके सुपरिंटेंडेंट अवधेशनारायण को ख़बर भेजी है। आपने आती बेर रास्ते में दो स्त्रियों को देखा है ?"

गे०—"हाँ, दोनों एक तिन मंज़िले मकान में चली गई हैं।"

मु०—"आप फिर उनको देखें, तो पहचान लेंगे ?"

गे०—"हाँ, मैंने ख़याल करके उनको देखा है। सामने आते ही पहचान लूँगा।"

मुरलीधर ने एक फ़ोटो देकर कहा—"अच्छा आप देखिए तो इस फ़ोटो को ?"

देखकर गेरुआ बाबा बोल उठे—"हाँ, यह उन्हीं में एक का फ़ोटो है, जो बड़ी उम्र की है और जिसको मैं मालकिन समझता हूँ। दूसरी इसकी लौंडी है। बात इतनी ही है कि यह फ़ोटो आजकल का नहीं, कई बरस पहले का है।"

मु०—"आप भूलते तो नहीं हैं न ?"

गे०—"नहीं, नहीं !"

मु०—"अच्छी बात है, सुपरिंटेंडेंट भी आते होंगे। उनसे यह बात मैं कह दूँगा। आपके कहे मुताबिक मैंने सब काम कर डाला है। देखिएगा सब आपको सम्हालना होगा।"

गे०—"कुछ परवाह नहीं, डाकूर हुई हैं। मैं भी मौजूद रहूँगा।

मु०—"हाँ, ऐसा ही तो बंदोबस्त हुआ है।"

इसी समय अवधेशनारायण आ पहुँचे। उनको आदर से बैठाकर मुरलीधर ने कहा—"आपको याद होगा। कई बरस हुए, मैंने अपनी स्त्री की खोज के लिये निवेदन किया था। आज देखा तो वही स्त्री एक लौंड़ी के साथ नहाकर सामने से गई है।

सुपरिंटेंडेंट ने बात सुनकर गेरुआ बाबा की ओर देखकर कहा—"मैं तो आपको यह बात पहले भी कह चुका हूँ।"

मु०—"हाँ, इन्होंने भी उन दोनों को किसी घर में घुसते देखा है।"

गेरुआ बाबा के हाँ कहने पर उनमें बातें होने लगी। फिर थोड़ी ही देर पर गेरुआ बाबा वहाँ से बिदा होकर बाबू मूलचंद के यहाँ चले। रास्ते में वहाँ के अख़बार का एडिटर मिला। उसको घर का नंबर और सड़क बतलाकर कहा—"कोई संवाददाता भेजकर ख़बर लीजिए, वहाँ कोई घटना हुई है।"

वहाँ से आगे बढ़ने पर वह एक जगह मेटूलाल बने और मूलचंद के मकान पर पहुँचकर नौकर को ख़बर दी। वहाँ से परवानगी पाते ही उनको वह भीतर ले गया। अब मूलचंद के पास बैठकर उन्होंने कहा—"आप मुझे बड़ा ला परवाह और आलसी समझते होंगे। लेकिन क्या करूँ मैं एक ज़रूरी काम में फँस गया था।" अब नरमी से मूलचंद ने कहा—"नहीं आप ऐसा मत समझिए। जब आप तकलीफ़ करके आ गए हैं, तब मेरा सब काम सिद्ध ही है।"

फिर मूलचंद सब कहने लगे—"अब समझ लीजिए कि कल रात की घटना से मेरे मन में बड़ा उद्वेग है। कल्ह जहाँ तक मैंने आपको कहा था उससे आगे कहता हूँ। जो चीज़ मेरे पास से उस चाँडाल ने छीन ली है, वह एक जड़ाऊ हार था। सोने का बना था, हीरे, मोती लाल, पोखराज करीने-से जड़े थे। उसमें जो सबसे बड़ा हीरा बीच में था वही उसमें से उखाड़ा गया है। वह प्यारी का है यह मैं जानता हूँ। दहेज में और गहने जो मिले थे, उनमें से उस हार को मैंने ख़ास तौर से देखा था। आधी रात से कुछ पहले मैं यहाँ आया था। उसके

बिहान ही मैं बाहर जानेवाला था। लेकिन इसी आफ़त में पड़कर जा नहीं सका। मैं ससुराल से लौट कर बगीचे के किनारे आता था। बाहरी फाटक खुला देखकर संदेह हुआ। क्योंकि रात बहुत जा चुकी थी। इसी कारण मैं भीतर घुसा। तब मैंने देखा तो दो चोर धीरे से रास्ते की आड़ में छिप गए। मैंने झपटकर उनको पकड़ना चाहा। दोनों दो ओर भागे। मैंने एक का पीछा किया, जिसका मैंने पीछा किया उसकी अनोखी चाल देखकर मैं चकित हुआ। कभी सीधा चलता, कभी हाथ धरती में रखकर चौपायों की तरह दौड़ता था। इस तरह वह तेजी से गुलाब के पेड़ों के बीच से होता हुआ भागा, उस समय मैंने सुना कि कोई आदमी झाड़ी में छिपा है और धीरे से "गबदू, गबदू आ!" कहकर पुकार रहा है। मैं बराबर दौड़ता जाता था। जब एक ही दो फाल पर वह रह गया, तब मैंने हाथ बढ़ाकर पकड़ना चाहा। उसके हाथ में देखा, तो कोई चीज़ चमक रही है। उसने वह चीज धरती में फेंक दी। मैंने उसे उठा लिया। इस अवसर में वह दूर भाग गया। पीछे मैंने बगीचे में बहुत ढूंढा, लेकिन कहीं किसी का पता नहीं चला। तब मैंने वह चीज़ देखी, तो वही हार है। मैं देखते ही पहचान गया। मैं उस घड़ी वहाँ न पहुँचता तो चोर जरूर उसे ले जाते। मैं उसी चीज़ को वापस देने के वास्ते गया था। किसी वजह से घर में नहीं गया। फेंकभी कौड़ी को

देखकर मैंने उसके हाथ में देना चाहा, उसको न जाने क्या हो गया। वह पागल की तरह चिल्लाकर भाग गई। फिर तो मुझ पर जो आफ़त आई, वह आपने देखा ही होगा।"

गे०—"हाँ, मैंने देखा था और उसके सिवाय और बातें भी मुझे मालुम हुई हैं। मैं आपका वह हार बहुत जल्द बरामद करूँगा। इस घड़ी एक काम के वास्ते जा रहा हूँ। फिर आप से मिलूँगा।

१५

जब गेरुआ बाबा आफ़िस से मुरलीधर के महल की ओर जाने को चले, तब लड़के को एक आदमी के साथ उन्होंने देखा था। फिर उसे छोड़कर वह दूसरे रास्ते चला गया। बालक आफ़िस की ओर आया, उससे गेरुआ बाबा की जो बातें हुईं वह सब पाठकों को मालूम हो ही चुकी है।

जब गेरुआ बाबा और सुपरिंटेंडेंट भीतर जाकर मिले, उन्होंने कहा—"मैं अभी मुरलीधर के लड़के से बात करके आया हूँ।"

सु०—"ऐ, मुरलीधर का लड़का! मुझे तो यही नहीं मालूम कि उनको लड़का है। मुझसे तो दस-बारह बरस से मेल-जोल है, लेकिन कुछ ख़बर मैं नहीं जानता कि उनको लड़का है।"

गे०—अच्छा, दस-बरस से उधर की बात तो आपने सुनी है।"

सु०—"यह आपकी पहेली मैं नहीं समझ सकता कि क्या कह रहे हैं।"

गे०—"आपने एक बार मुझसे कहा था कि नव-दस बरस हुए,मुरलीधर की स्त्री बाहर चली गई। उसकी फिर कुछ ख़बर नहीं मिली। चिट्ठी में एक लड़का पैदा होने की बात उसने लिखी थी। उसी तारीख़ के मुताबिक वह लड़का दस-बारह बरस का होगा।

सु०—"हाँ, मह बात मैंने ही आपसे कही थी। मैं मानता हूँ।"

गे०—"वही एक लड़का है, इस घड़ी दस-ग्यारह बरस का होगा। इसी शहर में है। उसका नाम इस घड़ी नगीना है। जब जरूरत हो, यह लड़का मिल सकता है।"

सु०—"अच्छी बात है बाबा जी! ख़ुद मुरलीधर को चिट्ठी मौज़ूद है। लड़का हो या लड़की। जो कोई उसको उनके पास पहुँचावेगा, वह पाँच हज़ार रुपया इनाम पावेगा।"

गे०—"अच्छी बात! यह तो पक्का है कि यह लड़का है। और उसका चेहरा मानो मुरलीधर का शार्ट एडिशन है। माँ-बाप हैं या नहीं उसकी कुछ ख़बर उसको नहीं है।"

"अच्छा, आपने ऐसा लड़का देखा है, तो उसपर निगरानी रखिए।" कह कर अवधेशनारायण मुसकुराए।

गे०—"वह पास ही खपरैल के मकान में रहता है। हरकारे का काप करता है।"

अब फिर गेरुआ बाबा आफ़िस से निकलकर मुरलीधर के मकान को रवाना हुए। लेकिन रास्ते ही में वह लड़का मिला। उसको लिए हुए लौट आए। सुपरिंटेंडेंट ने देखा, तो उन्हीं का गुप्तचर है। अच्छी बात है। आप जाइए यह तो हमारी नज़र ही में रहेगा।" यही कहकर गेरुआ बाबा को वहाँ से बिदाकर दिया और आप उस बालक से कई बातें पूछकर इन्होंने अपना संदेह मिटा डाला और पहले जितना उसका आदर प्यार करते थे उससे अधिक करने लगे।

इसके बाद वह आफ़िस के कमरे में आए। तुरंत ही मुरली-धर के यहाँ से ख़बर आई और चट वहाँ चले गए।

वहाँ जो बातें हुईं, वह सब हम ऊपर कह आए हैं। अब मुरलीधर के मकान से चलकर अवधेशनारायण मुरलीधर की निकली हुई स्त्री देवीबाला की खोज में चले।

गेरुआ बाबा के बतलाए हुए ठिकाने से मोड़ पर पहुँच कर उसी घर में घुसे। भीतर जाकर दाई! दाई! पुकारने लगे। दाई ने नीचे आकर पूछा—"का है?"

अ० ना०—"तुम तो पहचानोगी नहीं। मैं आया हूँ बहुत दूर से। मालकिन से कुछ कहना है।"

दाई०—"अभी तो नहाकर आई हैं। पूजा पर बैठी हैं। थोड़ी देर पर आना।"

अ० ना०—"हमको यहाँ रहना नहीं है। दो-दो बात तो करना ही है। पूजा करती हैं, तो करती रहें, वहीं से सुन लें।"

लौं०—"आमर ! कहाँ से आए हो, जो ऐसी बात करते हो?"

अ०ना०—"मैं उन्हीं से कहूँगा। यहाँ से चिल्लाना ठीक नहीं होगा।"

यह कहते हुए वह दाई की न मानकर ऊपर चले गए। जहाँ से खड़ी वह बात करती थी, उसी दरवाज़े पर जाकर देखा, तो मालकिन पूजा पर बैठी हैं। फ़ोटो की याद बनी ही थी। देखते ही उन्होंने पहचान लिया। कहा—"मैं देवीबाला से कुछ कहना चाहता हूँ।"

स्त्री बोली—"क्या कहना है?"

"ज़रा पानी तो लाओ दाई!" कहकर अवधेश नारायण ने पहले उसको बिदा कर दिया। तब अकेले में वे कहने लगे—"मैं आपसे आपके लड़के की कुछ बात कहने आया हूँ।"

स्त्री—"लड़का हमारे कहाँ है?"

अ०ना०—"आपके निकल आने से पहले जो लड़का पैदा हुआ था, उसी की बात मैं कह रहा हूँ।"

स्त्री—"तुम्हारी बात समझ में नहीं आती। जान पड़ता है किसी दूसरी देवीबाला की बात तुम करते हो।"

अ० ना०—"देखिए, फ़ज़ूल टलमटोल से काम नहीं बनेगा। मैं जासूस हूँ। आप मुरली बाबू की घरनी, नाम आपका देवी-बाला है। आपकी सब बातों का मुझे पता है। नाहक गड़ा मुर्दा क्यों उखड़वाती हैं।"

यह बात सुनकर स्त्री बड़ी अकचकाई। मन में सोचने

लगी। बात क्या है, उन्होंने इसके साथ मुझे बुलवाने का इरादा किया है क्या ! लेकिन ऐसा भरोसा नहीं होता। मुरली घमंडी आदमी ऐसा काम नहीं करेगा। वह अपने चैन से दिन काट रहे हैं। यह काम क्यों करेंगे ! इसके साथ ही अपनी दुर्दशा याद आई। जिसके मोह में पड़कर घर से निकली थी, उसका ख़राब स्वभाव, इस समय की हालत, भोंकू के पंजे में रहना, यह विचारकर बड़ा दुःख हुआ। निदान उनकी बातों पर कुछ भला-बुरा न कहकर बोली—"आपका मतलब क्या है?"

अ० ना०—"आप जब घर से निकल गए, उसके तीन महीने पर आपने अपने संतान होने की बात लिखकर अपने मालिक को भेजी थी ?"

स्त्री—"हाँ भेजी रही।"

अ० ना०—"यह भी लिखा था कि इसी संसार में कहीं उनका लड़का है। यहाँ तक कि माता को भी मालूम नहीं है कि कहाँ है ?"

स्त्री—"इसमें आप भूलते हैं।"

अ० ना०—"अच्छी बात है, ऐसी भूल चाहते भी हैं।"

स्त्री—"नहीं, फिर भी आपने नहीं समझा। जिस लड़के की बात आप कह रहे हैं। वह तो तीन ही दिन में मर गया।"

अ० ना०—"वह लड़का था कि लड़की ?"

स्त्री—"लड़का !"

अ० ना०—"तब तो आप ही भूलती हैं ?।"

स्त्री—"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

अ० ना०—"इतना जोर देने का कारण ?"

स्त्री—"बात यह कि गुनधर की और बात में चाहे जितनी शिकायत हो, लेकिन मुझे इतना चाहते थे कि मुझे दुःख होने का भय करके उन्होंने बालक के मरने की खबर मुझे नहीं दी। उनका एक नौकर था, उसी ने खबर भेजी थी। उस समय हम लोग काशी में थे। अब सोच लीजिए कि वह कैसे जीता होगा।"

अ० ना०—"अच्छा, वह नौकर कहाँ है ?"

स्त्री—"यहीं हैं। आप चाहें तो मैं पुकार दूँ।"

अ० ना०—"अच्छी बात है, बुलाओ। लेकिन इतनी दया जरूर कीजिए कि उसको पता न दिजिए। नहीं तो कुछ भी बात नहीं बतलावेगा। मैं इस परदे के अंदर जाकर छिप रहता हूँ।"

लौंडी को पुकारकर मालकिन ने पूछा—"झोंकू कहाँ है।"

"वह चोर कोठरी में है।" बात यह कि इस समय रोज़ वह कुछ देर उसी चोर कोठरी में रहता था। मालकिन ने अकचकाकर पूछा—" चोरकोठरी कैसी ?"

लौं०—"सीढ़ी के नीचे जो छिपी कोठरी है, उसी में रोज़ इस समय जाता और ठक-ठुक करता है और तो कुछ पता नहीं है।"

मा०—"अच्छा उसको मेरे पास भेजो।"

अब बुलाहट पाकर भोंकू आया। अवधेशनारायण आड़ में छिपकर सब देखने-सुनने लगे।

मा०—"मैंने एक बड़ी अनोखी ख़बर पाई है भोंकू!"

भों०—"कौन ख़बर मालकिन?"

लड़के की ख़बर मिली है। मैं तो जानती थी कि दस बरस हुआ होगा, वह जन्मा और मर गया था।"

इतना सुनकर वह भोंकू चुप हो रहा। स्त्री ने पूछा—"क्या सचमुच वह मर गया था?"

भों०—"इतने दिन पर आज आपको क्यों संदेह हुआ मालकिन?"

मा०—"मुझे मालूम हुआ है कि वह जीता है।"

फिर भोंकू चुप रहा। स्त्री ने पूछा—"सब बात साफ़ खोल कर बतलाओ भोंकू!"

भों०—"क्या बतलाऊँ?"

मा०—"यही कि वह जीता है या नहीं?"

भों०—"हाँ, मालकिन वह आज भी जीता है।"

मा०—"एँ तो मेरा बच्चा अभी जीता है?"

भों०—"हाँ, मालकिन जीता है।"

इतना सुनते ही मालकिन मानो आसमान से गिरी। वह कहने लगी—"तो इतना ठगपन मेरे साथ क्यों किया?"

भों०—"अब मैं आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहता। इतने दिन तक छिपाने की ज़रूरत थी। बालक अभी जीता है। बात

यह, थी कि आपके मालिक गुनधर बाबू उस लड़के की झंझट पसंद नहीं करते थे।

मा०—"लड़के-बच्चे झंझट होते हैं?"

भों०—"हमको तो उन्होंने हुक्म दिया था कि इसको गला-दबाकर मार डालो।"

मा०—"ओफ़ बापरे बाप! ऐसे हत्यारे?"

भों०—"मैं तो सरकार को बतला ही चुका हूँ कि वह बड़े निर्दई और कठ करेजी थे। लेकिन थे बड़े सुंदर, जो सरकार को मालूम ही है। मैंने उस लड़के की जान नहीं मारी। एक बुढ़िया को सौंप दिया था। उसके बाद वह ख़ुद खतम हो गए। उसके बाद मैं उस लड़के को यहाँ लाया। अब तक वह जीता जागता है। बड़ा होशियार और होनहार लड़का है। मालकिन सौ-हजार में एक है। मेरी बराबर उसपर नज़र है।

उकताकर मालकिन ने पूछा—"इस घड़ी वह कहाँ है?"

भों०—"इसी शहर में है।"

मा०—"तो कहाँ है। कैसे जीता है।"

भों—"एक जगह बाल दूत का काम कर रहा है मालकिन।"

मा०—"अच्छा उसको मेरे पास ले तो आओ!"

भों०—"बहुत अच्छा, मैं लाऊँगा मालकिन।"

मा०—"ठीक बोलो लाओगे न?"

भों०—"हाँ, मालकिन लाऊँगा काहे नहीं। आपका लड़का आपसे दूर रखने में मुझे क्या मिलेगा?"

"अच्छा लाना" हुक्म सुन कर भोंकू चला गया। अब अवधेश नारायण बाहर आए। मालकिन ने पूछा—"सब सुन लिया न आपने ?"

अ०ना०—"हाँ, सब सुना है हमने।"

मा०—"मैं तो बड़े अचरज में हूँ।"

अ०ना०—"हाँ, अचरज में होने की तो बात ही है।"

मा०—"अच्छा, आप उस लड़के को क्या करेंगे ?"

अ०ना०—"उसके बाप के पास पहुँचा देंगे।"

मा०—"नहीं आप हमको देवें। हमें कोई नहीं है।"

अ०ना०—"ऐसा कैसे होगा ?"

मा०—"काहे नहीं होगा। जरूर हमको ही देना होगा।

अ०ना०—"देखिए, आप नाराज़ न होना मालकिन। माँ के पास लड़के को रहने में सुख है सही। लेकिन जब वह माँ पति छोड़ कर घर से निकल गई; तब लड़के का मोह करने की क्या जरूरत है ? कानून तो उसे बाप ही के पास न पहुँचावेगा ?"

इतना सुनने पर वह बिसूर-बिसूरकर रोने लगी। अवधेशनारायण ने कहा—"मैं आज आपके पास इसलिये आया था कि आप लड़के की सब बातें जानती होंगी। और आपसे इसका पूरा पता लग जायगा कि वह मुरलीधर ही का है। लेकिन देखते हैं, तो आपको कुछ भी ख़बर नहीं है। लेकिन दया-माया आपको है। आप चिंता न कीजिए। वह लड़का मेरे ही पास है। लेकिन आप जो लड़के को माँगती हैं।

उसमें विचार कीजिए, तो उसको बाप के यहाँ रहने में ही उसकी भलाई है। खाली लिखने-ही-पढ़ने का सुभीता नहीं बल्कि मुरलीधर का वारिस उसके सिवाय-दूसरा कोई नहीं है। लेकिन आपके पास रहने में बड़ी गड़बड़ी है-पहले तो आपसे किसी से कुछ नेह-नाता नहीं। फिर उसको आप अपनी सब बातें बतला भी नहीं सकतीं। और उसके बाप की सब जायदाद दूसरा कोई भोग करे, यह तो उचित नहीं है न। फिर मुरलीधर गंभीर आदमी हैं। उसको आपके कलंक की बात हरगिज़ नहीं कहेंगे। आप सब नीच-ऊँच, भला-बुरा विचार कीजिए। देखिए, मैं जो कहता हूँ, उसमें भलाई है या नहीं।"

मालकिन रो-रो कर कहने लगी-"हा भगवान! मैं अपने बेटे की भी कोई नहीं ठहरी। हाँ, संसार में मेरा रहना नहीं के बराबर है। सब कुछ होते हुए भी मेरा कुछ नहीं है। धिक्कार है, मेरी कुबुद्धि पर। हाय!" यही कहकर वह बिसूरने लगी और अवधेशनारायण वहाँ से बिदा हो गए।

१६

जब अवधेशनारायण अपने आफ़िस में पहुँचे। देखते हैं तो गेरुआ बाबा बैठे कुछ चिंता कर रहे हैं। दो-एक बातें दोनों महाशयों में हुईं। फिर दोनों अपने-अपने आराम कमरे में चले गए।

लेटे-लेटे सुनते हैं, तो सड़क से अख़बार बेचनेवाला चिल्लाता

जाता है—"बड़ी ग़ज़ब खबर है। भयंकर डकैती। बड़े घर में ख़ून।"

गेरुआ बाबा ने बाहर निकलकर एक कापी अख़बार की ख़रीदी। उसमें देखा तो मुरलीधर के घर पर डाका पड़ने और उनकी लड़की के ख़ून होने की ख़बर छपी है। प्यारी के गहने चोरी जाने का समाचार दिया हुआ है।

जिस समय गेरुआ बाबा अख़बार पढ़ रहे थे। उसी समय भोंकू ने भी एक अख़बार लेकर अपनी मालकिन के हाथ में पहुँचाया। वह सब समाचार पढ़कर आँसू बहाने लगी। मन में कहने लगी "मेरी लड़की की यह दशा हुई। यहीं बैठी मैं सुन रही हूँ। कुछ नहीं कर सकती। ऐसी अभागिन। ऐसा कर्म हमारा।"

भोंकू ने खबर पढ़कर उससे और ही ढंग का स्वाद पाया। मन में कहने लगा–यह काम हमारे गबदू का है। उसी ने इस स्त्री का ख़ून किया है। लेकिन इस काम से आफ़त आवेगी। बेहतर है कि इस गबदू को अब मार काटकर गंगा में डाल दूँ, जिसमें कुछ किसी को पता न लगे। लिखा है कि चोट वैसी संगीन नहीं थी, लेकिन डरके मारे दिल की हरकत बंद होने से मौत हुई है। अगर मरने से पहले उसने सब घटना बयान कर दी होगी, तब तो जासूस के मारे जेल से जान नहीं बचेगी। अब ऐसा करना चाहिए कि गबदू का किसी को कहीं कुछ पता न लगे।

यही सब सोच-विचारकर भोंकू ने मन में ठीक किया कि कारनर की जाँच के बाद एक बार फेंकनी से भेंट करके सब तय करके सब ठीक करना होगा।

उधर अखबार में छपी हुई खबर पढ़कर हाल जानने के लिये मुरली बाबू के दरवाज़े पर लोगों की बड़ी भीड़ हुई। कारनर की जाँच खतम होने में देर नहीं लगी। काम पूरा करते ही, संस्कार करने का हुक्म देकर वह चले गए। अब भीड़ में तरह-तरह की बात होने लगी। भोंकू किनारे खड़ा सब देख-सुन रहा था।

इसी समय फेंकनी घर से बाहर आई। देखते ही भोंकू उसके पास गया। उसपर और किसी ने तो ध्यान नहीं दिया। लेकिन ऊपर खड़े गेरुआ बाबा की आँखों से वह ओट नहीं हुआ।

दोनों में कुछ देर बातें हुईं, फिर भोंकू चला गया। अकेले फेंकनी खड़ी देख रही थी। क्योंकि सुनती थी कि प्यारी बाई की लाश लोग लिए आ रहे हैं। इतने में गेरुआ बाबा ने बगल से आकर उसका हाथ पकड़ा और दूर जाते हुए भोंकू को दिखा कर पूछा—"यह कौन आदमी है?"

वह तो अकबकाकर उनका मुँह ताकने लगी। कुछ जवाब नहीं दिया। तब उन्होंने कहा—"बोल जल्दी; नहीं तो जानती है न कि हम क्या करेंगे?" इतना कह कर उन्होंने ऊपर का कपड़ा उतार डाला। अब वह डरकर बोली—"उसका तो नाम भोंकू है।"

गे०—"बस हो गया। यही मैं भी समझता था।"

अब मुरलीधर के पास पहुँचकर उन्होंने सावधान कर दिया कि बड़ी मुस्तैदी के लड़की की ख़बरदारी करें। कोई किसी तरह हटा न देवे या और कुछ न करे।"

ऊपर से देह उतारने में बहुत देर लगी। रात के आठ बज गए और यह देर जान-बूझ कर की गई थी। कोई आठ बजे चुने हुए कई आदमी रथी पर लेकर चले। इस अवसर पर वहाँ किसी जरूरी काम के न होने से गेरुआ बाबा आफ़िस चले गए।

आफ़िस पहुँचकर गेरुआ बाबा ने देखा तो उस नगीना नाम के लड़के को पास बिठाकर सुपरिंटेंडेंट कुछ सोच रहे थे। फिर बोले—"तुम चिंता मत करो। हम तो तुमको आदर करते थे और प्यार से पालते थे। यह सब तुमको होनहार देखकर किया था। लेकिन अब तुमको इस तरह भटकना नहीं होगा।"

अब अपने पिता के पास तुमको हम पहुँचावेंगे। वह तुमको पाल-पोष और पढ़ा-लिखा कर सुशील, गुणवान लड़का बनावेंगे। अब तुमको कमी किसी बात की नहीं रहेगी।"

बा०—"तो क्या सचमुच मैं अपने पिता को देख सकूँगा।"

सु०—"हाँ! हाँ!!"

बा०—"वाह! तब तो बड़े आनंद की बात होगी। अच्छा वह भी मुझे पाकर सचमुच खुश होंगे।"

सु०—"अरे ! वह बड़े कोमल चित्त के आदमी हैं। तुमारे वास्ते तो पागल हो रहे हैं।"

इसी समय गेरुआ बाबा आ पड़े थे। इससे अलग कमरे में सुपरिंटेंडेंट को बुला ले गए। वहाँ बातें होने लगीं। गेरुआ बाबा ने कहा—"अब तो मेरा काम बिलकुल रास्ते पर आ चला है।"

सु०—"कौन चोरीवाला या ख़ूनवाला।"

गे०—"दोनों ही।"

सु०—"लेकिन आपने बड़ी जल्दी कर ली।"

गे०—"गहने कहाँ हैं, सो मालूम हो चुका है और जिस चाँडाल ने सुशीला की जान लेनी चाही थी, उसको भी पहचान गया हूँ।"

सु०—"चाही थी, लेकिन जाहिर में तो खून कर चुका !"

गे०—"हाँ, वह बड़ी बातें हैं। अभी थोड़ा काम और बाकी है।"

सु०—"तो मेरी कुछ मदद चाहिए क्या ?"

गे०—"जी हाँ।"

सु०—"अच्छा पक्का हो चुका। अब कुछ संदेह तो नहीं है। अब बतलाइए यह बात कि कैसे पकड़ेंगे। वैसा बंदोबस्त हो।"

गे०—"मेरा असामी रोड...नंबर के मकान में रहता है। भोंकू उसका नाम है। वह एक बनमानुस को सिखलाकर

पक्का करके लाया है। इसीसे अमीरों की बहू-बेटियों के गहने जवाहिरात वग़ैरह चोरी करवा ले जाता है। मुरलीधर के गहनों का सुबूत मैं पा चुका हूँ। भोंकू का घर चारों ओर से घेर लेना होगा; जिसमें असामी भाग न सके। क्योंकि वह इसी रात को एक बजे की गाड़ी में भागनेवाला है। ठीक काम होने से सब माल भी मिल जाने का भरोसा है। अभी वह कुछ बेच नहीं सका है। मैं सब सर्राफ़ों को ख़बरदार कर चुका हूँ। इसके सिवाय यह कहीं जा भी नहीं सका है। अभी उसको पकड़ने से माल मिलेगा।"

सु०—"देखिए, कहीं कुछ भूल न हो।"

गे०—"नहीं साहब! सब ठीक है।"

सु०—"लेकिन वही तो मुरलीधर की स्त्री देवीवाला का मकान है।"

गे०—"हाँ, मैं भी ऐसा ही समझता हूँ।"

सु०—"मैंने तो भोंकू को देखा है।"

गे०—"अरे! तो आप उस चोर को देख चुके हैं?"

सु०—"हाँ, मैं इस नगीना की बात इसकी माँ और भोंकू दोनों के मुँह से सुन चुका हूँ।"

गे०—"अच्छा, लड़के की बात कल्ह पर रखिए। मेरा मामला ग्यारह बजे के भीतर सब ठीक-ठाक हो जाना चाहिए।"

सु०—"कुछ परवाह नहीं! मैं घेराव करने को आदमी भेजता हूँ। आप अपना बाकी काम ठीक-ठाक कर लीजिए।

बस मैं आधे घंटे में वहाँ जाऊँगा। वहीं गिरफ्तारी का सब सामान तैयार रहेगा। थाने-पुलीस के सब आदमी तैनात रहेंगे। मैं अभी डी० एस्० पी० के यहाँ जाता हूँ।"

"बहुत अच्छा" कहकर गेरुआ बाबा चले गए।

वहाँ से मुरलीधर के मकान पर पहुँचे और भीतर जाते ही फेंकनी की बुलाहट हुई।

जब वह सामने आई, अकेले में गेरुआ बाबा ने कहा—"देख फेंकनी! जो कुछ पूछता हूँ ठीक जवाब दे, नहीं तो जानती है, तेरी क्या गति मैं करूँगा।"

वह सुनते ही घबड़ा गई। कुछ देर सहम कर बोली—"क्या पूछते हैं?"

गे०—"और सब बात पूछने से पहले तुमको मैं इतना बतला देना चाहता हूँ कि वह भोंकू इसी रात को गिरफ्तार किया जायगा। उसकी चोरी का पता लग गया है। उसका ठिकाना भी मालूम हो चुका है। अब वह भाग नहीं सकता। तुम यही ठीक बतला दो कि बबुई कि चोरी के मामले में तुम क्या-क्या जानती हो? तुम इसमें बात जानती हो, यह पता लग गया है। अगर झूठ कहोगी तो जेल में ठेल दी जाओगी।"

इतना सुनते ही फेंकनी गेरुआ बाबा के पाँव पर गिर पड़ी और गिड़-गिड़ा कर बोली—"मोको जेलखाना मत दीजिए। सब ठीक मो कहे देती हौं। पहले हम लोग मेरठ में रहती रहीं। मेरा बाप डाँकुओं के गोल में रहता था। मुझसे वह डाकुओं का

पता लेने और लोभ में डालकर लोगों को लाने का काम लेते थे। एक बार वह पुलीस के हाथ में ऐसे पड़े कि भाग न सके। क्योंकि भागती बेर गोली खाकर गिर पड़े। उसीसे उनकी जान गई। मैं पकड़कर जेलख़ाने भेजी गई। भोंकू ने अपने बनमानुस से मुझको वहाँ से निकाला। मैंने वैसा कुछ क़सूर नहीं किया था। खाली डाकुओं ने मुझे भुलाकर काम करा लिया था। इसी से वहाँ उन लोगों ने फिर गिरफ़्तार नहीं किया। तभी से मैं भोंकुआ के हाथ में पड़ गई। वह कहता है कि न जानें उसके पास कौन काग़ज़ है, इससे हमको जब चाहे जेलख़ाने दे सकता है। मेरठ से मुझे वह यहाँ ले आया। मैं कई बड़े घरों में दाई थी। मेरा काम वहीं कि बेटी-बहुओं के गहने कहाँ रक्खे हैं, इसकी ख़बर भोंकू को देना। वही यह बात अपने बनमानुस को समझा देता है और वह भी ऐसा चालाक़ है कि समझकर सब काम कर लेता है और गहना लाकर उसको दे देता है। जिस दिन प्यारी बबुई का गहना गया था, उस दिन मैंने बनमानुस को देखा था। यह समझा था कि डराने से यह छोड़कर भाग जायगा। मैंने एक चाभी बहू के गहनों के बक्स का ताला खोलने के लिये उनकी चाभी का साँचा बनवा लिया था। मैं बबुई को बहुत चाहती थी। मेरा इरादा नहीं था कि उनके गहने चोरी जाँय। इसीसे जब मैं डराई, तब बक्स लेकर भागने लगी। मैंने इसको पकड़ कर खींचा इसीसे बक्स खुल गया और मेरे हाथ में चोट आई। एक हाथ में तो गहना

पकड़ा, लेकिन बनमानुस बड़ी ताक़तवाला था, छीन कर ले भागा। उसने कई बार मुझे भोंकू के साथ देखा था। यही ख़ैर हुई, नहीं तो मेरी भी हालत वह बबुई की कर देता। हाय मोरी बबुई! ओह चाँडाल के हाथ से तुमको मरना लिखा रहा।"

गे०—"अच्छा एक हीरा तुम्हारे घर में कैसे गया?"

फें०—"मोहूँ हैरान हूँ, जान पडता है खींचा-खींची में कहीं मोरे कपड़े में रहा। बस साथ चला गया। मोको कुछ ख़बर नहीं।"

अब गेरुवा बाबा फेंकनी को लेकर आफ़िस चले। वह डराने लगी, लेकिन बाबा ने कहा—"अगर तुमने सच कहा है, तो डरने की कुछ बात नहीं है। आफ़िस से सब लोग देवीवाला के मकान को चले। वहाँ देखा तो पुलिस उस घर को घेर कर बैठी है। कोई किसी ओर भाग नहीं सकता। सुपरिंटेंडेंट अवधेशनारायण ने पूछा—"कुछ नई बात है।" उसने जवाब दिया "जी नहीं। कुछ नई नहीं है। दो गाड़ीवान भीतर आए थे, वे चले गए हैं!"

गे०—"हम लोग गाड़ी आने से पहले के आए हुए हैं।"

धक्का देते ही दरवाज़ा खुला। भीतर से एक ने कहा—"गाड़ी कहाँ है?" फिर एक गुट्ट भीतर घुसा। बरंडों में सब सामान धरा तैयार मिला। सफ़र की तैयारी है। जान पड़ता है, फेंकनी से भोंकू ने सुना था कि बनमानुस ने प्यारी को घायल किया और प्यारी ने जासूस को कह दिया है। इसी से इतनी जल्दी भागने की तैयारी हुई है।

गेरुआ ने पूछा—"वह नौकर भोंकू कहाँ है?"

लौंड़ी ने कहा—"कौन जाने आज संझा के कहाँ गया है। कह गया है कि आज नहीं आवेगा।"

अच्छी तरह ढूंढने पर भी कहीं भोंकू का पता नहीं चला। जब सब थक गए, तब अवधेशनारायण ने कहा—"चलो चोर-कोठरी में देखें, उसमें जरूर मिलेगा।"

गे०—"ऐसा क्यों आप समझते हैं?"

सु०—"जब मैं देवीबाला से मिलने आया था। तभी पता लगा कि उसमें रहा करता है।"

अब गेरुआ बाबा और आवधेशनारायण कई आदमियों के साथ चोरकोठरी की खोज में जीने से उतरे, तो किवाड़ की फाँक से जरा रोशनी आ रही थी। भीतर देखते हैं, तो उसमें पुर्ज़े हैं, एक शीशी में दवा भी रक्खी है और भी कई तरह की दवा शीशियों में धरी हैं। भोंकू चूल्हे के पास पिछौंड़ बैठा है। यह देख कर वे बड़े .खुश हुए। लेकिन भोंकू ऐसा तन्मय होकर काम करता था कि उसको कुछ ख़बर नहीं हुई; जब तक गेरुआ बाबा ने यह नहीं कहा—"अब तो पींजड़े में आ गए।"

जब उसने देखा गरजकर बोला—"ओहो! तुम लोग हो! कुछ परवा नहीं। एक ही लात में रोशनी बुझाकर बोला—"मुझे अब भी नहीं पाओगे।"

भोंकू ने समझा था कि अंधेरे में धक्का देकर निकल जायँगे, लेकिन रोशनी बुझते ही अवधेशनारायण और गेरुआ बाबा के

जासूसी लंप जगमगा उठे। अब देखा तो उजियाले में खड़ा है। कहीं भागने का उपाय नहीं।

उसने देखा दो हाथों में दो ओर से दो पिस्तौल की नाल उसकी खोपड़ी ताक रही हैं।

कुछ परवाह नहीं की और गरजकर पूछा—"क्या कहते हो।" जवाब मिला "बस हथकड़ी में बँध जाव।" उसने कहा "ऐसा मैं न करूंगा।"

यही कह कर तेज़ी से उसने एक पिस्तौल की नाल मुँह में करके लबलबी दबा दी। खोपड़ी उड़ी और वह गिर गया। देखा तो उसी घर में एक ओर मुरलीधर के सब गहने पड़े हैं।

फ़ैर सुनकर मालकिन नीचे आईं। गेरुआबाबा ने पूछा—"क्या हाल है?"

मालूम हुआ कि काशी जाने की तैयारी थी।

गे०—"आपको मालूम है, हम लोग यहाँ क्यों आए हैं?"

मा०—"नहीं, मैं तो नहीं जानती।"

गे०—"हम लोग उस आदमी को गिरफ़्तार करने आए हैं, जिसने मुरली बाबू के गहने चुराए हैं।"

मा०—"मेरे घर में चोर है?"

गे०—"हाँ, और चोर को देखा भी है। गहने भी मिल गए हैं। लेकिन चोर बड़ा तेज़ी वाला है। उसने अपने को आप ही मार डाला है। आप भी इसमें शामिल हैं।"

मा०—"मैं भी?"

गे०—"जी हाँ यह चोर आपका नौकर है, नाम है भोंकू।"

मा०—"वह भोंकू मेरा नौकर होने पर भी, वह चोर है। यह मैं कैसे जान सकती हूँ?"

उसका भाव ऐसा दिखाई दिया कि वे ठीक विचार नहीं कर सके कि वह इसमें है या नहीं।

गेरुआ बाबा एक थैली में सब गहने उठाकर ले गए पहले मरघट की ख़बर मँगाई। मालूम हुआ कि मुरलीधर अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं। झट उनके मकान पर पहुँचे। देखा तो बाप-बेटी बैठे बातें कर रहे हैं।

गेरुआ बाबा ने सब गहने मुरली बाबू के सामने रक्खे। अब दोनों की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। उनको दिए हुए वचन के अनुसार उन्होंने पारितोषिक दिया। अब गेरुआ बाबा का यश भी बहुत बढ़ गया।

अब प्यारी का हाल संक्षेप में कह देना जरूरी है। गेरुआ बाबा ने चोर की आँख में धूल डालने की गरज़ से एक दवा प्यारी को पिला दी थी। इससे आदमी कई घंटे ऐसा हो जाता है कि बड़ा प्रवीण वैद्य-डाक्टर भी पहचान नहीं सकता कि मरा है वा बेहोश है। उसी से प्यारी बेहोश थी। बाकी बातें पहले ही कही जा चुकी हैं। उनका मतलब यही था कि चोर समझेगा कि गबदू के घाव से ही प्यारी बेहोश थी और मर गई। फिर होश में नहीं आई न पता चला कि किसने क्या किया? लेकिन अख़बार में जैसा बयान छपा था, उसकी

ध्वनि से चोर ने ताड़ लिया कि उतनी संगी नचोट न होने पर भी जब मर गई है, तब दाल में कुछ काला जरूर है। उसी से भोंकू ने जल्द भागने की तैयारी की थी। जब सामान बोरिया-बँधना तैयार कर लिया, गेरुआ बाबा ने जाँच कर ठीक निशाना दाग दिया और चोर गिरफ़्तार हो गया। उसके गिरफ़्तार होने की ख़बर पाते ही मुरलीधर लड़की को ऊपर ले गए और उसके बाद वह होश में आई।

अब प्यारी के मन में यही दुःख हुआ कि नाहक उस दिन संदेह करके स्वामी को अपराधी समझ और दुर्भाव दिखाकर चिट्ठी लिखी। इसके लिये भीतर बड़ी वेदना-सी हुई। जब सुना कि बनमानुस के हाथ से गिरा हुआ गहना पाकर स्वामी देने आए थे और उसी अवसर पर डाकू ने उनपर चोट की, तब प्यारी की तकलीफ़ का कूल-किनारा नहीं रहा। मुरलीधर सबेरे उठते ही दामाद से जाकर मिले और उन्होंने मूलचंद के आराम होने की बात लौट कर कन्या को सुनाई।

फिर निरोग होने पर वह बड़े आदर से ससुराल में पधराए गए। दोनों ओर से बीती घटना कहकर अपना-अपना दुःख दूर किया गया। अंत को सबको सुख हुआ, जिसका परिणाम अच्छा हो, वही अच्छा होता है।

चोर गिरफ़्तार होने के दूसरे ही दिन मुरलीधर बाबू के घर सुपरिंटेंडेंट अवधेशनारायण पहुँचे और उनके बेटे का पता मिलने की बात उन्होंने कही। अब मुरलीधर की

ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से इनाम देकर अपना वचन पूरा किया। सुपरिंटेंडेंट ने इनाम लेकर उसमें से गेरुआ बाबा को भी दिया और शेष सेवा-समिति के स्थायी कोष में डाल दिया। बालक को धीरे-धीरे अपना दिन फिरने का अनुभव हुआ। वह योग्य शिक्षक के हाथ सौंपा गया। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। बड़ी तेज़ी से पढ़ने और बढ़ने लगा।

फेंकनी ने भोंकू के हाथ में पड़कर ही सब किया था। उसका प्रायश्चित करने के लिये अपने को सबसे छिपा कर रक्खा। वह स्वामी के पास जीते ही मर गई थी। बेटा-बेटी के लिये भी मर चुकी थी। जिनसे आदर पाकर माता को आदर होता है, उस सुख से भी वंचित रही। स्वामी की धन-संपति के उपभोग से दूर होकर एक कोने में दिन बिताती रही।

महानुभाव मुरलीधर बेटा-बेटी को लेकर सुख से दिन काटने लगे। बेटे की उम्र होने पर ब्याह कर दिया। प्यारी घर जाकर मूलचंद के घर की गृहिणी हुई। मुरलीधर बाबू का घर नगीना के रूप-गुण और गृहलक्ष्मी पतोहू के आने से जगमगा उठा। दोनों ओर सुख-संपत्ति बिराजने लगी। भगवान ने जैसे उनका दिन फेरा, वैसे सबका फेरे।

इति।

भारी रियायत !

केवल ग्राहक-सूची में नाम लिखाने से हमारी प्रकाशित सभी पुस्तकें पौने मूल्य में ख़रीदने का अपूर्व अवसर !!

हिंदुस्तान-भर की सभी हिंदी पुस्तकें -)॥ फ़ी रुपया कमीशन पर ख़रीदने का एक मात्र साधन !!!

एस्० एस्० मेहता एँड ब्रदर्स

पुस्तक-प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स

काशी ।

हमारी उत्तमोत्तम पुस्तकें

आलम-केलि

यह वही काव्य है, जिसके लिये काव्य-मर्मज्ञ सवा दो सौ वर्ष से ललायित हो रहे थे। इसकी रचना आलम और सेख़ ने मिलकर की है। अगर आपको ऊँची साहित्यमर्मज्ञता, सच्ची कृष्ण-भक्ति और अनूठी प्रतिभा का परिचय पद-पद पर प्राप्त करना हो, तो आप अवश्य इस काव्य की एक प्रति मँगाइए। ला० भगवानदीनजी ने इसका संपादन कर तथा टिप्पणी लिखकर इसको सर्वसाधारण के लिये बहुत सरल और सुगम कर दिया है। मुल्य केवल १) ग्राहकों से ॥।)

सरस्वती, प्रभा, साहित्य, आज आदि पत्र और पत्रिकाओं और सुप्रसिद्ध विद्वानों ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

नवरसतरंग

इसके रचयिता कविवर बेनीप्रवीन हैं। पुस्तक का नाम ही इसके विषय का द्योतक है। यों तो हिंदी संसार में रस संबंधी अनेक ग्रंथ हैं, किंतु जैसी साहित्यिक छटा, काव्य-कुशलता, विषय प्रतिपादन और रचना-चातुरी इसमें नज़र आती है, वैसी दूसरे, बिरले ही ग्रंथों में नज़र आवेगी। एक ही बार

आद्योपांत पढ़ने से रस संबंधी अच्छा ज्ञान हो जाता है। काव्य को सरल, सुगम और उपयोगी बनाने का कवि ने पूरा ध्यान रक्खा है। तिसपर से इसके सुयोग्य संपादक, सुप्रसिद्ध समालोचक और माधुरी-संपादक पं० कृष्णविहारी मिश्र बी,०ए० एल्-एल्०बी० ने सर्वसाधारण में प्रचारार्थ पुस्तक के अंत में टिप्पणी भी दे दी है; जिससे इसकी उपयोगिता का अब पूछना ही क्या रहा? इतना ही नहीं, पुस्तक के आदि में लिखी हुई सुविज्ञ संपादकजी की सारगर्भित भूमिका ने न केवल पुस्तक में जान डाल दी है, बल्कि हिंदी-संसार को ज्ञातव्य विषय की सूचना भी दी है। सुविज्ञ संपादकजी की लेखनी से हिंदी संसार भली-भाँति परिचित है। विशेष लिखना कोरे कागजही रंगना है। इतने ही से पुस्तक का महत्व समझ सकते हैं। मुल्य केवल १) ग्राहकों से ।।।)

अंजना-सुंदरी

लेखक, हमारे सुपरिचित लेखक पं० उमाशंकर मेहता। पृष्ट संख्या १२८, मूल्य ।।।) ग्राहकों से ॥-)

हिंदू कहलाने वाला बिरला ही शख़्स होगा, जिसने प्रातः स्मरणीय वीर श्रीहनुमानजी का नाम न सुना हो। यह नाटक उन्हीं की पूजनीय माता सती अंजना-देवी के चरित्र पर गढ़ा गया है। एक दासी के व्यंगपूर्ण वचन को सुनकर पवनजय का क्रोधित होकर अंजना का परित्याग करना, उनके परम-